राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण सोमवार 23 मार्च 2026 वर्ष-9,अंक-57 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सूरत में सम्राट अशोक महान की 2330वीं जयंती पर निकली ऐतिहासिक विशाल रैली, हजारों लोगों की सहभागिता

युवाओं, बुजुर्गों और बच्चों की बड़ी भागीदारी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बढ़ाया आयोजन का गौरव

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत,गुजरात

सूरत शहर में सम्राट अशोक महान की 2330वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में एक भव्य एवं ऐतिहासिक रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शहर का माहौल पूरी तरह उत्सवमय नजर आया, जहां हजारों

लोगों ने एकजुट होकर सम्राट अशोक के विचारों और उनके आदर्शों को याद किया।

रैली की शुरुआत सचिन-पांडेसरा क्षेत्र से हुई, जो उधना और डिंडोली जैसे प्रमुख इलाकों से गुजरती हुई उधना स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर के पास आकर संपन्न हुई। इस विशाल रैली में करीब 10,000 से अधिक युवा, बुजुर्ग और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

रैली के दौरान आकर्षक झांकियां भी प्रस्तुत की गईं, जिनमें सम्राट अशोक के जीवन, उनके धर्म, अहिंसा, न्याय और जनकल्याण से जुड़े विचारों को जीवंत रूप में दर्शाया गया। इन झांकियों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया और इतिहास के स्वर्णिम अध्याय को सामने रखा। जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और पूरे मार्ग में अनुशासन और ऊर्जा का प्रदर्शन किया।

इसके पश्चात विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हास्य कवि मन कुमार ने अपनी प्रस्तुति से लोगों को हंसी से लोटपोट कर दिया, वहीं अधिवक्ता

वक्ताओं और कलाकारों ने भी अपने-अपने अंदाज में कार्यक्रम को भव्य और यादगार बनाया।

प्रमुख राष्ट्रीय फूले संघ अंजलि सैनी ने अपने विचारों के माध्यम से समाज में जागरूकता का संदेश दिया।

इसके अलावा लोक गायक प्रदीप मौर्या, धनजय कुशवाहा लोक गायक पटना, शिवनंदन मौर्या राष्ट्रीय लोक गायक,ने अपनी लोक गायकी से सम्राट अशोक के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाया। अन्य

इस पूरे आयोजन का उद्देश्य समाज में सम्राट अशोक के सिद्धांतों—अहिंसा, शांति, धर्म और मानवता—को पुन: स्थापित करना था। आयोजकों ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम युवाओं को इतिहास से जोड़ने और समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैलाने का कार्य करते हैं।

कार्यक्रम का समापन उत्साह, अनुशासन और सामाजिक एकता के संदेश के साथ हुआ। यह आयोजन सूरत शहर के लिए एक ऐतिहासिक और

प्रेरणादायक क्षण बन गया, जिसने लोगों को सम्राट अशोक के आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम में विशेष रूप से सामेल हुए अतिथि में श्री मती प्रतिभा कुशवाहा सदस्य राज्य महिला आयोग (ऊ. प्र.),एडवोकेट अंजली सैनी अध्यक्ष राष्ट्रीय फुले संध,मा. दिनेश सिंह कुशवाहा विधायक बापूनगर, मा.संजय मौर्या राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रियदर्शी अशोक मिशन,धनजय कुशवाहालोक गायक पटना, शिवनंदन मौर्या राष्ट्रीय लोक गायक युवा कल्याण संस्कृतिविभाग उतरप्रदेश, प्रदीप मौर्या लोक गायक अमेठी ऊ.प्र., मन कुमार राष्ट्रीय कवि अहमदाबाद, और समाज के सभी लोगों ने भाग लिया

यह आयोजन न केवल

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

धर्मक्रांति का विलक्षण प्रयोग है योगक्षेम वर्ष

ललित गर्ग

साररूप में यही कहा जा सकता है कि योगक्षेम वर्ष केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक विचार है; केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक आंदोलन है; केवल एक वर्ष नहीं, बल्कि एक युग परिवर्तन की शुरूआत है। यह वास्तव में धर्म क्रांति के नए अध्याय का आधार है, जो मनुष्य को बाहर से भीतर की यात्रा की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है। आचार्य श्री महाश्रमण एवं साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा के संचेतन पुरुषार्थ की सार्थकता इसी में है कि इनके मार्गदर्शन में हम प्रगति की महती मंजिलें तय करते हुए चैतन्य जागरण के नये आयाम में प्रवेश करें। यदि यह प्रयास सफल होता है, तो निश्चित रूप से आने वाला समय आध्यात्मिक जागरण, अहिंसा, शांति और प्रेम का समय होगा, और यही इस योगक्षेम वर्ष की सबसे बड़ी सार्थकता और सफलता होगी।

आज का युग विज्ञान, तकनीक और भौतिक प्रगति का युग माना जाता है, लेकिन इसी के साथ यह युग तनाव, असंतोष, हिंसा, युद्ध और मानसिक अशांति का भी युग बन गया है। मनुष्य ने बाहर की दुनिया को जीत लिया, लेकिन अपने भीतर की दुनिया को जीत नहीं पाया। उसने साधन बना लिये, लेकिन साधना भूल गया; उसने सुविधा पा ली, लेकिन शांति खो दी। ऐसे समय में यदि कोई आध्यात्मिक आंदोलन मनुष्य को अपने भीतर की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है, तो वह केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि धर्म क्रांति का आधार बन जाता है। इसी संदर्भ में जैन धर्म एवं दर्शन की तप, त्याग, साधना और अहिंसा की महान परंपरा में एवं महान् संत आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में मनाया जा रहा योगक्षेम वर्ष वास्तव में धर्म क्रांति के नए अध्याय का आधार बनता दिखाई देता है। भारत की धरती पर यह एक ऐसा वर्ष मनाया जा रहा है, जो न संयुक्तराष्ट्र संघ द्वारा घोषित है न किसी राजनीतिक संगठन द्वारा प्रेरित है और न किसी महान पुरुष की स्मृति से जुड़ा हुआ है, इस वर्ष को मनाने का उद्देश्य है सर्वांगीण व्यक्तित्व-निर्माण।

मेरी दो दिन की लाडनूं यात्रा एवं योगक्षेम वर्ष में सहभागिता का सार है कि योगक्षेम वर्ष एक बार फिर धर्मसंघ के अभ्युदय का स्वर्णिम अवसर बन रहा है। जिसका उद्देश्य है अप्राप्त की प्राप्ति एवं प्राप्त का संरक्षण। यह अवसर दृष्टि एवं सोच में बदलाव का माध्यम होगा। जो ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधना में गति प्रदान करेगा। अनेक नवीन एवं पुरातन विषयों का तलस्पर्शी ज्ञान, जिससे वक्तृत्व में गंभीरता आएगी। आधुनिक दुनिया में धर्म को विशेषतः जैन धर्म को युगानुरूप प्रस्तुति देने का यह माध्यम बनेगा। योगक्षेम वर्ष के साथ विकास के तीन अर्थ हैं- आगे बढ़ना, रूकना और पीछे मुड़कर देखना। आगे बढ़ना यानी दुनिया के नवीनतम धर्म दर्शनों को आत्मसात करना। रूकना यानी अपनी विरासत को खगोलना। पीछे मुड़कर देखना यानी अपनी परम्परा और दर्शन को जीवंत करना। निश्चित तौर पर जैन धर्म के महान तपस्वी, अनुशासनप्रिय, दूरदर्शी और तेजस्वी आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आध्यात्मिकता और आधुनिकता का अद्भुत संगम बनी जैन विश्व भारती में आज एक नया आध्यात्मिक इतिहास रचा जा रहा है, आध्यात्मिक प्रशिक्षण की एक नई परंपरा विकसित की जा रही है। यह वास्तव में जैन धर्म का एक अनूठा और संभवतः पहला ऐसा व्यापक प्रयोग है, जिसमें वर्षभर तक साधु-साध्वियों के साथ-साथ श्रावक समाज को भी गहन एवं व्यवस्थित रूप से जैन एवं तेरापंथ दर्शन, अध्यात्म, योग, ध्यान, स्वाध्याय, संयम और जीवन मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों ही परंपराओं में योगक्षेम शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह विशेष अर्थवत्ता का संवाहक है। तेरापंथ

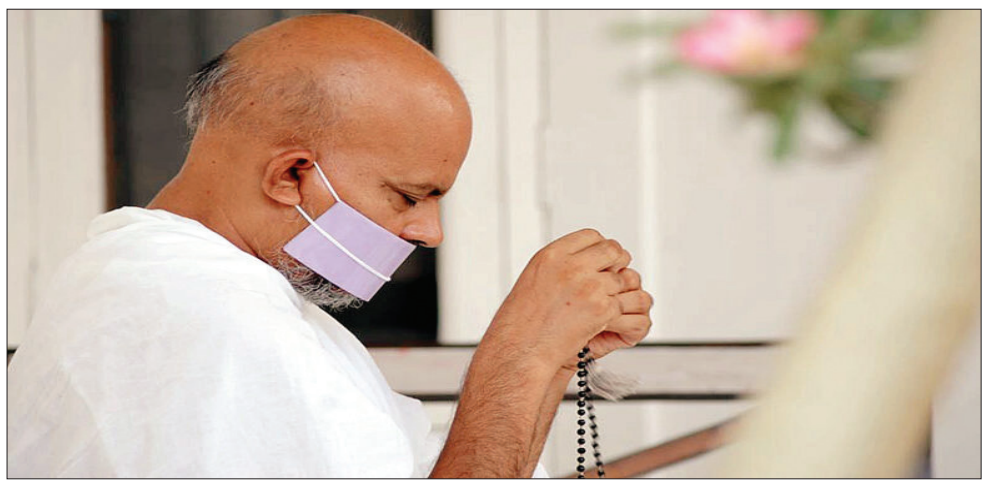

धर्मसंघ ने इसे नया संदर्भ दिया है। प्रज्ञा या अन्तर्दृष्टि के जागरण से अनुर्बोधित किया है। योगक्षेम वर्ष का अर्थ भी अत्यंत गहरा और व्यापक है। योग का अर्थ केवल योगासन या शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मसंयम, ध्यान, साधना, तप, स्वाध्याय, अनुशासन और आत्मजागरण है। क्षेम का अर्थ है आत्मकल्याण, मानसिक शांति, संतुलन, सुरक्षा और आध्यात्मिक उन्नति। इस प्रकार योगक्षेम वर्ष का उद्देश्य है- व्यक्ति के भीतर योग अर्थात् आत्मसंयम और साधना का विकास हो तथा उसके जीवन में क्षेम अर्थात शांति, संतोष और आध्यात्मिक कल्याण स्थापित हो। जब व्यक्ति का जीवन संतुलित और शांत होगा, तभी समाज में शांति आएगी और जब समाज शांत होगा, तभी विश्व में शांति संभव होगी। आचार्य तुलसी के समय में भी साधना, योग और आध्यात्मिक जागरण से जुड़े इस योगक्षेम वर्ष की विशेष आयोजना हुई थी। उस समय के प्रयोगों की सफलता और सार्थकता को देखते हुए अब उसी परंपरा को नए स्वरूप में पुनः प्रारंभ किया गया है। यह परंपरा और नवाचार का सुंदर समन्वय है, जहाँ पुरानी साधना परंपरा आधुनिक धर्म-समाज की आवश्यकताओं के अनुसार नए रूप में सामने आ रही है। यही जीवंत धर्म की पहचान है कि वह समय के साथ अपने स्वरूप को समाज के हित में विकसित करता रहे।

आज विश्व जिस दौर से गुजर रहा है, वह अत्यंत चिंताजनक है। दुनिया के अनेक हिस्सों में युद्ध, आतंकवाद, हिंसा, असहिष्णुता, मानसिक तनाव, अवसाद, पारिवारिक विघटन और पर्यावरण संकट जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। विज्ञान और तकनीक इन समस्याओं का पूर्ण समाधान नहीं दे सकते, क्योंकि ये समस्याएँ बाहरी नहीं, बल्कि मनुष्य के मन से जुड़ी हुई हैं। जब तक मनुष्य के भीतर शांति नहीं होगी, तब तक बाहर शांति संभव नहीं है। इसलिए आज दुनिया को हथियारों से ज्यादा ध्यान की जरूरत है, प्रतिस्पर्धा से ज्यादा करुणा की जरूरत है, और भौतिकता से ज्यादा आध्यात्मिकता की जरूरत है। योगक्षेम वर्ष इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो मनुष्य को अपने भीतर की यात्रा करने के लिए प्रेरित करता है। योगक्षेम वर्ष के माध्यम से संदेश दिया जा रहा है कि धर्म केवल सुनने की चीज नहीं, बल्कि जीवन में धारण करने एवं जीवन को बदलने की चीज है; धर्म केवल मानने की चीज नहीं, बल्कि जीने की चीज है। यदि व्यक्ति अपने जीवन में थोड़ा संयम, थोड़ा ध्यान, थोड़ा स्वाध्याय, थोड़ा त्याग और थोड़ा प्रेम जोड़ ले, तो उसका जीवन स्वयं बदल सकता है। यही छोटा परिवर्तन आगे चलकर समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकता है। इसलिए योगक्षेम वर्ष वास्तव में व्यक्ति परिवर्तन से समाज परिवर्तन और समाज परिवर्तन से राष्ट्र एवं विश्व परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

योगक्षेम वर्ष के कार्यक्रमों को 'प्रज्ञापर्व' नाम से अभिहित किया गया क्योंकि प्रज्ञा का जागरण इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था। 'पण्णा समिक्खए' इस आगम सूक्त को प्रतीक के रूप में रखा गया। इस विलक्षण प्रयोग एवं प्रशिक्षण के पीछे पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण का लक्ष्य या संकल्प है-'चतुर्विध धर्मसंघ के व्यक्तित्व का निर्माण करना, उनकी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना, भावनात्मक विकास करना, स्वभाव-परिवर्तन की कला सिखाना और प्रायोगिक जीवन जीना सिखाना, एक वाक्य में कहा जाए तो आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।' पूरे वर्ष प्रशिक्षणार्थी को अनेक विषयों के ज्ञान के साथ योगासन, ध्यान, कायोत्सर्ग, जप, अनुप्रेक्षा, मंत्र साधना आदि के प्रयोग भी कराए जा रहे हैं। यदि मनुष्य अहिंसा को अपनाए, तो युद्ध समाप्त हो सकते हैं; यदि अनेकांत को अपनाए, तो विवाद समाप्त हो सकते हैं; यदि अपरिग्रह को अपनाए, तो आर्थिक और पर्यावरण संकट कम हो सकते हैं। इस प्रकार जैन धर्म का दर्शन केवल धार्मिक दर्शन नहीं, बल्कि विश्व शांति का दर्शन है, और योगक्षेम वर्ष उसी दर्शन को व्यवहार में उतारने का प्रयास है।

आचार्य श्री महाश्रमण की दूरदर्शी सोच, उनका अनुशासन, उनका साधना-प्रधान जीवन और समाज को आध्यात्मिक दिशा देने का उनका प्रयास वास्तव में अद्वितीय है। उन्होंने धर्म को केवल परंपरा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन और समाज से जोड़ा। समय को बांधने की अद्भुत खूबी है उनमें। कम समय में अधिक काम। वह भी इतनी सहजता और निर्भरता से सम्पादित कर लेने की सामर्थ्य, उनकी कार्य व्यस्तता कभी व्यग्रता में नहीं बदलती। यह सब इसीलिए हो सकता है कि उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति निवृत्ति से निथर कर आती है। उनकी क्रियाशीलता आंतरिक स्थिरता स्थितप्रज्ञता से अभिनिःसृत होती है। उन्होंने साधना को केवल साधु-साध्वियों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि श्रावक समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया। योगक्षेम वर्ष उसी दूरदृष्टि और आध्यात्मिक सोच का परिणाम है, जो आने वाले समय में जैन धर्म ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। वास्तव में योगक्षेम वर्ष को जैन धर्म के इतिहास में एक स्वर्णिम दौर की शुरूआत के रूप में देखा जा सकता है। यह वर्ष साधना का वर्ष है, आत्मजागरण का वर्ष है, संयम का वर्ष है, चरित्र निर्माण का वर्ष है, और सबसे बढ़कर यह धर्म क्रांति का वर्ष है। यदि इस वर्ष का संदेश जन-जन तक पहुँचे, लोग योग, ध्यान, संयम, अहिंसा, शांति और प्रेम को अपने जीवन में अपनाएँ, तो समाज में एक नया परिवर्तन आ सकता है। तब धर्म केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देगा।

साररूप में यही कहा जा सकता है कि योगक्षेम वर्ष केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक विचार है; केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक आंदोलन है; केवल एक वर्ष नहीं, बल्कि एक युग परिवर्तन की शुरूआत है। यह वास्तव में धर्म क्रांति के नए अध्याय का आधार है, जो मनुष्य को बाहर से भीतर की यात्रा की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है। आचार्य श्री महाश्रमण एवं साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा के संचेतन पुरुषार्थ की सार्थकता इसी में है कि इनके मार्गदर्शन में हम प्रगति की महती मंजिलें तय करते हुए चैतन्य जागरण के नये आयाम में प्रवेश करें। यदि यह प्रयास सफल होता है, तो निश्चित रूप से आने वाला समय आध्यात्मिक जागरण, अहिंसा, शांति और प्रेम का समय होगा, और यही इस योगक्षेम वर्ष की सबसे बड़ी सार्थकता और सफलता होगी।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

अब यह 'तेल-गैस युद्ध'

ईरान युद्ध में अमरीका की ओर से कुछ सुखद संकेत आए हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने स्पष्ट किया है कि वह अमरीकी सैनिक नहीं भेजेंगे। अमरीका युद्ध जीत चुका है। ईरान का पूरा नेतृत्व समाप्त हो चुका है। अब शीघ्र ही सामान्य हालात होंगे। अमरीका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट का बयान आया है कि ईरान पर से तेल की पाबंदियां हटाई जा सकती हैं। समुद्र में जिन जहाजों, टैंकरों में ईरान का तेल है, वह उसे किसी भी देश को बेच सकेगा। शीघ्र ही फैसला लिया जा सकता है। अमरीकी राष्ट्रपति ने युद्ध की समाप्ति के संकेत दिए हैं, लेकिन जब तक वह घोषणा नहीं करते और अपनी सेनाओं की वापसी का आदेश नहीं देते, तब तक सब कुछ अनिश्चित और अस्थिर है, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप की फितरत ही ऐसी है। दरअसल ईरान युद्ध के आयाम बिल्कुल बदल चुके हैं। अब यह ह्यतेल-गैस युद्धह्ल के खौफनाक, विध्वंसक चरण में प्रवेश कर चुका है। यदि अमरीका वाकई युद्ध समेटना चाहता है, तो पेंटागन ने अमरीकी कांग्रेस (संसद) से 200 अरब डॉलर, यानी 18.64 लाख करोड़ रुपए, के अतिरिक्त फंड की मांग क्यों की है? यह बेहद मौजू सवाल है। यदि भारत के शेयर और कारोबारी बाजार की बात करें, तो युद्ध के 20 दिनों में ही 37 लाख करोड़ रुपए स्वाहा हो चुके हैं। बीती 19 मार्च को एक ही दिन में करीब 14 लाख करोड़ रुपए डूब चुके हैं। ये सिर्फ वित्तीय सेवाओं, संस्थानों और कॉरपोरेट के ही नुकसान हैं। समग्र नुकसान अनंत, असीम हो सकता है। विशेषज्ञों के आकलन हैं कि यदि कच्चे तेल की कीमतें, लंबे वक्त तक, 120 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर रहीं, तो वित्त वर्ष 2027 में देश की जीडीपी बढ़ोतरी और कॉरपोरेट आय पर बुरा असर पडना तय है। भारत 19 लाख करोड़ रुपए का निर्यात खाड़ी देशों को करता है, जो युद्ध के कारण बाधित है, जाहिर है कि अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है। ईरान के जिस 'साउथ पार्स गैस प्लांट' पर इजरायल ने विनाशकारी हमला किया था, वह 1800 ट्रिलियन क्यूबिक फीट गैस का सर्वाधिक उत्पादन करता है। पार्स अकेले ही 13 लंबे सालों तक दुनिया की गैस-जरूरतों की आपूर्ति कर सकता था। प्राकृतिक गैस उत्पादन में ईरान, अमरीका और रूस के बाद, तीसरा सबसे बड़ा गैस उत्पादक देश है। प्राकृतिक गैस 'ईरान की लाइफलाइन' रही है, क्योंकि वहां 80 फीसदी बिजली प्राकृतिक गैस से ही बनाई जाती रही है। उस प्लांट को जला कर खाक कर दिया गया है।

चिंतन-मनन

प्रार्थना की पुकार

यदि प्रार्थना सच्ची हो तो परमपिता परमेश्वर उस प्रार्थना को जरूर ही सुनते हैं। परमपिता परमेश्वर अत्यंत कृपालु और दयालु हैं, परंतु प्रार्थना के लिए भी हृदय का पवित्र और निर्मल होना अत्यंत आवश्यक है। मन का पवित्र होना, अहंकार और अभिमान से रहित होना नितांत आवश्यक है। ऐसे पवित्र-हृदय-अंतः करण से उत्पन्न हुए भाव ही प्रार्थना हैं। हृदय की पवित्रता का अर्थ है अपने आपको सांसारिक तुच्छ विषय-वासनाओं की आसक्तियों से मुक्त कर लेना। सब तरह की आसक्ति से रहित होना ही हृदय की पवित्रता है। किसी तपस्वी ने ठीक ही कहा है- सच्चे-वास्तविक जीवन को पाने की आकांक्षा उत्पन्न होना ही प्रार्थना है। हमारे भीतर हृदय में जिसकी खोज होगी, भीतर जिस चीज को पाने की प्यास होगी- तो, ही हम उस दिशा में जा सकेंगे। प्रार्थना होती है आत्म बोध से। आत्मबोध में ही परमार्थ की प्यास जगती है और तुच्छ स्वार्थी का परित्याग होता है।

प्रार्थना है- परिपूर्ण समर्पण, अपने अहंकार के बोझ को अपने सिर से उतार फेंकना और उसके पावन चरणों में अपना सिर झुका देना। जो प्रभु की कृपाएं और उनका अनुग्रह चाहता है उसे चाहिए कि वह किसी से भी किसी तरह का वैर-विरोध न करे। वह सत्य बोले, वह असत्य, छल-कपट, निंदा-चोरी आदि से हमेशा दूर रहे। अपनी इंद्रियों पर हमेशा संयम रखे, किसी भी प्रकार का लोलुप-लालची न हो। वह कभी अहंकार अभिमान न करे, शत्रु-द्वेष को छोडकर मन को शुद्ध पवित्र रखें। प्रार्थना की शक्ति बहुत ही अद्भुत है। वह भगवान को भक्त का उद्धार करने के लिए अवश्य ही बाध्य कर देती है, परंतु प्रार्थना सच्ची हो, हृदय से हो। भगवान ने प्रार्थना मीरा की सुनी, बुद्ध की सुनी, उन सबकी सुनी जिन्होंने परहित के लिए उन्हें याद किया। वह हर मानव मन में चल रहे भाव-कुभाव को अच्छी तरह से जानते हैं। अतः उसके समक्ष जब भी जाएं, शुद्ध भाव रखें।

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु : शहादत जो आज भी जिंदा है

योगेश कुमार गोयल

भारत के महान् वीर सपूतों भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धांजलि देने के लिए प्रतिवर्ष 23 मार्च को शहीद दिवस मनाया जाता है, जो प्रत्येक भारतवासी को गौरव का अनुभव कराता है। यह वही दिन है, जब अंग्रेजों से भारत की आजादी के लिए लड़े भारत मां के वीर सपूतों भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को अंग्रेजों ने ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जॉन सॉन्डर्स की हत्या के आरोप में फांसी पर लटका दिया था। हालांकि पहले इन वीर सूपतों को 24 मार्च 1931 को फांसी दी जानी थी लेकिन इनके बुलंद हौंसलों से भयभीत ब्रिटिश सरकार ने जन आन्दोलन को कुचलने के लिए उन्हें एक दिन पहले 23 मार्च 1931 को ही फांसी दे दी थी।

क्रांतिकारियों राजगुरू और सुखदेव का नाम हालांकि सदैव शहीदे आजम भगत सिंह के बाद ही आता है लेकिन भगत सिंह का नाम आजादी के इन दोनों महान क्रांतिकारियों के बगैर अधूरा है क्योंकि इनका योगदान भी भगत सिंह से किसी भी मायने में कमतर नहीं था। तीनों की विचारधारा एक ही थी, इसीलिए तीनों की मित्रता बेहद सुदृढ़ और मजबूत थी। भगतसिंह और सुखदेव के परिवार लायलपुर में आसपास ही रहते थे और दोनों परिवारों में गहरी दोस्ती थी। 15 मई 1907 को पंजाब के लायलपुर में जन्मे सुखदेव भगतसिंह की ही तरह बचपन से आजादी का सपना पाले हुए थे। भगत सिंह, कामरेड रामचन्द्र और भगवती चरण बोहरा के साथ मिलकर उन्होंने लाहौर में नौजवान भारत सभा का गठन कर सॉन्डर्स हत्याकांड में भगतसिंह तथा राजगुरू का साथ दिया था। 24 अगस्त 1908 को पुणे के खेड़ा में जन्मे राजगुरू छत्रपति शिवाजी की छापामार शैली के प्रशंसक थे और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से काफी प्रभावित थे। अच्छे निशानेबाज रहे राजगुरू का रूझान जीवन के शुरूआती दिनों से ही क्रांतिकारी गतिविधियों की तरफ होने लगा था। वाराणसी में उनका सम्पर्क क्रांतिकारियों से हुआ और वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से जुड़ गए। चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और जतिन दास राजगुरू के अभिन्न मित्र थे।

पुलिस के बर्बर लाठीचार्ज के कारण स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गज नेता लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए राजगुरू ने 19 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह के साथ मिलकर लाहौर में जॉन सॉन्डर्स को गोली मारकर स्वयं को गिरफ्तार करा दिया था और भगत सिंह वेश बदलकर कलकत्ता निकल गए थे, जहां उन्होंने बम बनाने की विधि सीखी। भगत सिंह बिना कोई खून-खराबा किए ब्रिटिश शासन तक अपनी आवाज पहुंचाना चाहते थे लेकिन तीनों क्रांतिकारियों को अब यकीन हो गया था कि पराधीन भारत की बेड़ियां केवल अहिंसा की नीतियों से नहीं काटी जा सकती, इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों की मजदूरों के प्रति शोषण की नीतियों के पारित होने के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए लाहौर की केन्द्रीय असेम्बली में बम फैंकने की योजना बनाई।

1929 में चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में 'पब्लिक सेफ्टी' और 'ट्रेड डिस्प्यूट बिल' के विरोध में सेंट्रल असेंबली में बम फैंकने के लिए 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' की पहली बैठक हुई। योजनाबद्ध तरीके से भगत सिंह ने 8 अप्रैल 1929 को बटुकेश्वर दत्त के साथ केन्द्रीय असेंबली में एक खाली स्थान पर बम फैंका, जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि वे चाहते तो भाग सकते थे लेकिन भगत सिंह का मानना था कि गिरफ्तार होकर वे बेहतर ढ़ंग से अपना संदेश दुनिया के सामने रख पाएंगे। असेंबली में फैंके गए बम के साथ कुछ पर्चे भी फैंके गए थे, जिनमें भगत सिंह ने लिखा था, ह्यआदमी को मारा जा सकता है, उसके विचारों को नहीं। बड़े साम्राज्यों का पतन हो जाता है लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं और बहरे हो चुके लोगों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज जरूरी है।'

हालांकि भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को अलग-अलग मामलों में गिरफ्तार किया गया था लेकिन पुलिस ने तीनों को जॉन सॉन्डर्स की हत्या के लिए आरोपित किया। गिरफ्तारी के बाद सॉन्डर्स की हत्या में शामिल होने के आरोप में भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव पर देशद्रोह तथा हत्या का मुकद्दमा चलाया गया और उन्हें मौत की सजा सुनाई। इसी मामले को बाद में ह्यलाहौर षड्यंत्र केसह्ल के नाम से जाना गया। भगत सिंह और उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हडताल की। 23 मार्च 1931 की शाम भारत मां के इन तीनों महान वीर सपूतों को फांसी दे दी गई। फांसी पर जाते समय तीनों एक स्वर में गा रहे थेः-

दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू ए वतन आएगी।

ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फैंकने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले इन तीनों महान् स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को देश सदैव याद रखेगा। वतन के लिए त्याग और बलिदान इनके लिए सर्वोपरि रहा। इनके विचार आज भी देश के करोड़ों युवाओं का मार्गदर्शन करते हैं।

तेल, गैस के बाद इन्टरनेट पर ग्रहण लग सकती है

बिनोद कुमार सिंह

डिजिटल दुनिया रफ्तार पर लग सकती ब्रेक, हैईरान, होर्मुज और इंटरनेट की अदृश्य जंग के मड़राते काले बादल...

विश्व व्यवस्था के बदलते परिदृश्य में अब शक्ति की परिभाषा केवल सैन्य क्षमता या आर्थिक पहलु तक सीमित नहीं रह गई है,बल्कि यह धीरे-धीरे डिजिटल ढाँचे और डेटा नियंत्रण तक फैलती जा रही है। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के मध्य एक नई आशंका ने वैश्विक मंच पर विचार - विमर्श को जन्म दिया है - क्या ईरान ऐसी स्थिति उत्पन्न कर सकता है,जिससे विश्व की इंटरनेट व्यवस्था प्रभावित हो जाए? यह प्रश्न केवल एक सनसनीखेज संभावना नहीं,बल्कि उस जटिल वैश्विक ताने-बाने का अंहम हिस्सा है,जिसमें मानव समुदाय का आधुनिक जीवन पूरी तरह उलझा हुआ है। विगत दिनों में होर्मुज जलडमरू मध्य को विश्व ऊर्जा आपूर्ति के सबसे संवेदनशील मार्ग के रूप में देखा जाता रहा है,जहाँ से होकर वैश्विक तेल व्यापार का एक बड़ा हिस्सा गुजरता है। वैश्विक राजनीतिक जानकारों का कहना है कि बदलते समय के साथ यह क्षेत्र केवल ऊर्जा का मार्ग नहीं रहा, बल्कि यह डिजिटल दुनिया की एक महत्वपूर्ण धुरी बन चुका है। समुद्र की गहराइयों में बिछी फाइबर- ऑप्टिक केबल्स,जो आँखों से ओझल रहती हैं,वास्तव में वैश्विक इंटरनेट की जीवनरेखा हैं। इन्हीं के माध्यम से दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के बीच डेटा का निरंतर प्रवाह बना रहता है। लाल सागर और होर्मुज जैसे क्षेत्र इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं,क्योंकि यहाँ से गुजरने वाली केबल्स यूरोप,एशिया और अफ्रीका को जोड़ती हैं। इन केबल्स के जरिए ही वीडियो कॉल, ईमेल,बैंकिंग लेन-देन, शेयर बाजार की गतिविधियाँ और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेवाएं संचालित होती हैं। यह पूरी व्यवस्था इतनी सहज लगती है कि सामान्यतः हम इसकी जटिलता और संवेदनशीलता को समझ ही नहीं पाते। इंटरनेट को लेकर यह धारणा कि इसे एक झटके में बंद किया जा सकता है,तकनीकी रूप से पूरी तरह सही नहीं है। वैश्विक इंटरनेट एक विकेंद्रीकृत प्रणाली है, जिसमें सैकड़ों केबल्स और हजारों सर्वर जुड़े हुए हैं। इसलिए किसी एक देश के लिए पूरी दुनिया का इंटरनेट ठप कर देना संभव नहीं है। फिर भी, यह भी उतना ही सच है कि यदि किसी महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर स्थित केबल्स को नुकसान पहुंचता है,तो इसका असर व्यापक स्तर पर दिखाई दे सकता है। इंटरनेट पूरी तरह बंद न भी हो,तो उसकी गति धीमी हो सकती है,सेवाओं में बाधा आ सकती है और वैश्विक संचार व्यवस्था अस्थिर हो सकती है। भारत जैसे विकासशील देश,जो तेजी से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं,इस प्रकार के किसी भी व्यवधान से सीधे प्रभावित हो सकते हैं। आज बैंकिंग,शिक्षा,स्वास्थ्य,व्यापार और सरकारी सेवाओं का बड़ा हिस्सा इंटरनेट पर निर्भर हो चुका है। यदि डेटा के प्रवाह में किसी प्रकार की बाधा आती है,तो इसका असर केवल तकनीकी नहीं,बल्कि सामाजिक और आर्थिक भी होगा। आम नागरिक को इसका अनुभव इंटरनेट की धीमी गति,ऑनलाइन सेवाओं में देरी और डिजिटल लेन-देन में असुविधा के रूप में होगा,जबकि बड़े स्तर पर यह आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित कर सकता है। इस पूरे परिदृश्य में वैश्विक टेक कंपनियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। एमजॉन,माईक्रो साफ्ट और गुगल जैसी कंपनियों ने पश्चिम एशिया के विभिन्न देशों में बड़े डेटा सेंटर स्थापित किए हैं,जो वैश्विक नेटवर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन केंद्रों के माध्यम से डेटा का आदान-प्रदान होता है और विभिन्न महाद्वीपों के बीच डिजिटल संपर्क बना रहता है। यदि समुद्री केबल्स प्रभावित होती हैं,तो इन कंपनियों की सेवाओं पर भी असर पड़ सकता है,जिसका प्रभाव दुनिया भर के उपयोगकर्ताओं तक पहुंचेगा। आज की भू-राजनीति में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि डेटा और कनेक्टिविटी भी एक प्रकार की शक्ति बन चुके हैं। जिस प्रकार ऊर्जा आपूर्ति को नियंत्रित करके वैश्विक स्तर पर प्रभाव डाला जाता है,उसी प्रकार डेटा प्रवाह को प्रभावित करके भी दबाव बनाया जा सकता है। होर्मुज और लाल सागर जैसे क्षेत्र अब केवल भौगोलिक महत्व के नहीं रहे, बल्कि वे रणनीतिक दृष्टि से ह्यडिजिटल चोक-पॉइंटह्ल बनते जा रहे हैं,जहाँ किसी भी प्रकार की अस्थिरता का असर दूर-दूर तक महसूस किया जा सकता है। हालांकि इस संभावित खतरे को देखते हुए दुनिया पूरी तरह असहाय नहीं है। वैकल्पिक समुद्री मार्गों का विकास,सैटेलाइट आधारित इंटरनेट सेवाओं का विस्तार और डेटा नेटवर्क को अधिक लचीला बनाने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। वही वर्तमान के वैश्विक ढांचा अभी भी इन प्रमुख मार्गों पर काफी हद तक निर्भर है। संक्षेप का सार यह है कि ह्लईरान पूरी दुनिया का इंटरनेट बंद कर देगाह्ल जैसी बातें भले ही अतिशयोक्ति हों,लेकिन इनके पीछे छिपी चेतावनी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह हमें यह समझने का अवसर देती है कि आधुनिक दुनिया कितनी गहराई से आपस में जुड़ी हुई है और किस प्रकार एक क्षेत्र की अस्थिरता का प्रभाव वैश्विक स्तर पर पड़ सकता है। आज आवश्यकता है एक संतुलित और दूरदर्शी दृष्टिकोण की, जिसमें तकनीकी समझ, कूटनीतिक संतुलन और राष्ट्रीय हितों का समन्वय हो। आने वाले समय में शक्ति का स्वरूप और भी बदलने वाला है,उस समय वही देश आगे होंगे,जो न केवल अपनी सीमाओं की रक्षा करेंगे,बल्कि अपनी डिजिटल संरचना को भी सुरक्षित और मजबूत बनाए रखेंगे। वैश्विक राजनीतिक के मामले पर पैनी नजर रखने वाले जानकारों का कहना है कि अगर ईरान - इसाईल-अमेरिका के युद्ध विराम नही होता तो डिजिटल दुनिया रफ्तार पर लग सकती है। ब्रेक,हैईरान,होर्मुज और इंटरनेट की अदृश्य जंग के मड़राते काले बादल ना केवल भारत जैसे विकासशील देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर सकती है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

एफपीआई ने मार्च में अब तक भारतीय शेयर बाजार से 88,180 करोड़ निकाले

फरवरी में एफपीआई ने 22,615 करोड़ रुपये का निवेश किया था

नई दिल्ली ।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने मार्च 2026 में भारतीय शेयर बाजार से 88,180 करोड़ रुपये (लगभग 9.6 अरब डॉलर) की निकासी की है। एनएसडीएल के आंकड़ों के अनुसार एफपीआई हर कारोबारी सत्र में शुद्ध बिकवाल रहे। फरवरी में एफपीआई ने 22,615 करोड़ रुपये का निवेश किया था, जो पिछले 17 महीनों में सबसे ऊंचा था। लेकिन मार्च में निकासी के साथ, 2026 में अबतक एफपीआई की कुल निकासी एक लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गई है। विश्लेषकों का कहना है कि निकासी के कई कारण हैं जैसे पश्चिम एशिया में तनाव- क्षेत्रीय संघर्ष और अस्थिरता ने निवेशकों की धारणा प्रभावित की है। कच्चे तेल की ऊँची कीमतें- होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने से तेल 100 डॉलर प्रति बैरल के पार गया, जिससे भारत की वृद्धि और कंपनियों की कमाई पर असर पड़ने की आशंका बढ़ गई। अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में वृद्धि- बढ़ते बॉन्ड रिटर्न ने डॉलर संपत्तियों को अधिक आकर्षक बनाया और एफपीआई उभरते बाजारों से पैसे निकाल रहे हैं और रुपया और वैश्विक बाजार की कमजोरी- रुपये में गिरावट और वैश्विक बाजारों की अस्थिरता ने जोखिम लेने की प्रवृत्ति को कम किया।

एलएनजी आपूर्ति बाधित, देश के यूरिया संयंत्र आधी क्षमता पर परिचालन

नई दिल्ली ।

पश्चिम एशिया संकट के बीच, पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड ने अपने टर्मिनल पर अपरिहार्य स्थिति घोषित की है। आपूर्तिकर्ताओं ने जलडमरूमध्य में व्यवधान के कारण अनुबंधित मात्रा में गैस की आपूर्ति नहीं कर पाने की जानकारी दी। यह कदम सरकारी गैस वितरक कंपनियों गेल (इंडिया) लिमिटेड, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन और भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड को आपूर्ति घटाने के लिए मजबूर कर रहा है। उद्योग सूत्रों के अनुसार, गैस आपूर्ति को सामान्य स्तर से घटाकर 60-65 प्रतिशत तक कर दिया गया है। कुछ संयंत्रों में यह 50 प्रतिशत से भी नीचे है। इसका प्रत्यक्ष असर यूरिया उत्पादन पर पड़ा है, जिससे कई संयंत्रों में उत्पादन लगभग आधा रह गया है। संयंत्रों की बड़ी अमोनिया-यूरिया ट्रेनें अचानक उत्पादन घटाने या बढ़ाने के लिए डिज़ाइन नहीं की गई हैं। कम लोड पर चलने के कारण ऊर्जा दक्षता में गिरावट आई और ऊर्जा की खपत 40 प्रतिशत तक बढ़ गई। इससे संयंत्रों को उत्पादन कम करने के बावजूद अधिक लागत का सामना करना पड़ रहा है। परिचालन में समन्वय टूटने के कारण स्थिति और जटिल हो गई है। विश्लेषकों का कहना है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े यूरिया उपभोक्ताओं में से एक है। घरेलू कमी आने वाले खरीफ बुवाई सत्र से पहले उर्वरक की उपलब्धता पर असर डाल सकती है। हालांकि, 19 मार्च तक देश का कुल यूरिया भंडार 61.14 लाख टन था, जो पिछले साल इसी अवधि के 55.22 लाख टन से अधिक है।

श्री राम नवमी समेत इस हफ्ते 4 दिन बैंक रहेंगे बंद!

नई दिल्ली । इस सप्ताह बैंक सेवाओं में छुट्टियों का असर देखने को मिलेगा। श्री राम नवमी जैसे त्योहारों के कारण कई शहरों में बैंक बंद रहेंगे। साथ ही शनिवार और रविवार भी होने से कुल 4 दिन बैंकिंग सेवाएं प्रभावित होंगी। 26 मार्च गुरुवार को श्री राम नवमी पर अहमदाबाद, बेलापुर, चंडीगढ़, देहरादून, जयपुर, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, रांची, शिमला में बैंक बंद। 27 मार्च शुक्रवार राम नवमी (चैते दशैन) - भोपाल, भुवनेश्वर, गंगटोक, हैदराबाद, पटना, विजयवाड़ा में बैंक बंद। 28-29 मार्च को चौथा शनिवार और साप्ताहिक रविवार अवकाश। 31 मार्च को महावीर जयंती के अवसर पर बैंक बंद रहेंगे। 1 अप्रैल को कुछ शाखाओं में कामकाज नहीं होगा।

अमेरिका-इजराइल और ईरान युद्ध की टेंशन से शेयर बाजार में तगड़ी बिकवाली

विदेशी निवेशकों ने मार्च में अब तक निकाल लिए 88000 करोड़

नई दिल्ली।

मिडिल ईस्ट में युद्ध और इससे तेल की कीमतों में लगी आग ने दुनिया के तमाम देशों को झुलसा दिया है। जैसे-जैसे जंग आगे बढ़ रही हैं, तेल संकट भी गहराता जा रहा है, जिससे ग्लोबल टेंशन चरम पर है। शुरुआत में जहां अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच सीनियर लीडर्स और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया जा रहा था, तो अब ये युद्ध एक तेल युद्ध में बदल चुका है और मिसाइलों के निशाने पर एनर्जी साइट्स हैं। ईरान युद्ध ने जहां भारत समेत दुनियाभर के शेयर बाजारों को हिलाया, तो वहीं विदेशी निवेशकों के सेंटीमेंट पर भी इसका बेहद बुरा असर हुआ है। विदेशी निवेशकों का मूड ऐसा खराब हुआ कि इस महीने अब तक उन्होंने तगड़ी बिकवाली करते हुए भारतीय शेयर बाजारों से 88,000 करोड़ रुपये से ज्यादा निकाले हैं।अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता युद्ध, कच्चे तेल की कीमतों में ताबड़तोड़ तेजी और इस बीच भारतीय करेंसी रुपये में गिरावट ने विदेशी निवेशकों के सेंटीमेंट खराब कर दिया। बीते महीने के आखिर में यानी 28 फरवरी को शुरू हुए मिडिल ईस्ट युद्ध से मार्च महीने में अब तक एफपीआई ने जमकर बिकवाली की है। पहले पखवाड़े में ही इनके द्वारा 52,704 करोड़ रुपये (लगभग 5.73 अरब डॉलर) की निकासी की गई थी, जो बीते हफ्ते और भी बढ़ गई। मार्च में अब तक एफपीआई ने 88,180 करोड़ रुपये (9.6 अरब डॉलर) निकाले हैं। युद्ध की टेंशन और इसके दुनिया के तमाम देशों में दिख रहे असर के चलते मार्च महीने में लगभग हर दिन विदेशी निवेशक सेलर बने हुए नजर आए हैं। महीने के तीन सप्ताह में ही निकासी का आंकड़ा 88,180 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। इससे पहले फरवरी महीने में ही विदेशी निवेशकों की वापसी हुई थी। मार्च की इस बिकवाली के चलते 2026 में अब तक एफपीआई निकासी का आंकड़ा 1 लाख करोड़ रुपये के पार हो गया है।थी, जो अब 93 का स्तर पार कर चुकी है। कई एक्सपर्ट्स ने रुपया के 95 तक टूटने का अनुमान भी जाहिर किया है।

भारतीय शेयर बाजार पर पश्चिम एशिया संकट का असर जारी रहेगा

- निवेशक पश्चिम एशिया संकट और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों पर नजर रखेंगे

मुंबई ।

बीते सप्ताह मामूली बदलाव के बाद आने वाले सप्ताह में भारतीय शेयर बाजार पर वैश्विक कारकों का दबाव जारी रहने की संभावना है। निवेशक पश्चिम एशिया संकट और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों पर नजर रखेंगे। इसके अलावा, घरेलू अर्थव्यवस्था पर इन घटनाओं के प्रभाव का भी आंकलन किया जा रहा है। पश्चिम एशिया में ईरान और इजरायल के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। निवेशक इस युद्ध और उससे जुड़े जोखिमों को लेकर सतर्क रहेंगे। ऐसे समय में शेयर बाजार में रिस्क-ऑफ माहौल पैदा होता है, जिससे बिकवाली का दबाव बढ़ सकता है। युद्ध और आपूर्ति बाधाओं के कारण कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि हुई है। इससे न सिर्फ महंगाई पर असर पड़ेगा, बल्कि तेल पर निर्भर कंपनियों के लाभ मार्जिन पर भी दबाव बन सकता है। फरवरी में आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन धीमा रहा, जो पहले से ही चिंताजनक संकेत है। धीमी उत्पादन दर घरेलू मांग और आर्थिक गतिविधियों पर असर डाल सकती है। निवेशक इसे बाजार की धारणा और शेयरों की कीमतों पर नकारात्मक प्रभाव वाला मान रहे हैं। पिछले सप्ताह की मामूली गिरावट के बाद इस सप्ताह बाजार में धिक उतार-चढ़ाव की संभावना है। निवेशक जोखिम कम करने के लिए सतर्क कदम रखेंगे। भारतीय शेयर बाजार पर भू-राजनीतिक तनाव और तेल की बढ़ती कीमतों का प्रमुख असर रहेगा। निवेशक सतर्क रहेंगे और संभावित उतार-चढ़ाव के हिसाब से रणनीति अपनाएंगे। विशेष ध्यान उन सेक्टर्स पर रहेगा, जिनका तेल की कीमतों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर अधिक असर पड़ता है।

पश्चिम एशिया संघर्ष, रुपये में गिरावट से भारत में खाद्य तेल-तिलहन बाजार में तेजी

वैश्विक आपूर्ति में बाधा, महंगी आयात लागत और घरेलू आवक में कमी ने कीमतों को प्रभावित किया

नई दिल्ली ।

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और डॉलर के मुकाबले रुपये की गिरावट ने भारत के खाद्य तेल-तिलहन बाजार में तेजी ला दी है। बीते सप्ताह सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, बिनौला और पाम तेल की कीमतों में मजबूती देखने को मिली। बाजार जानकारों का कहना है कि वैश्विक आपूर्ति में बाधा, महंगी आयात लागत और घरेलू आवक में कमी ने कीमतों को प्रभावित किया है। युद्ध से पहले सोयाबीन डीगम तेल की कीमत लगभग 1,200 डॉलर प्रति टन थी, जो अब 1,325-1,330 डालर प्रति टन तक पहुंच गई है। डॉलर के मुकाबले रुपये के 93.53 प्रति डॉलर तक गिरने से आयात महंगा हुआ। अर्जेंटीना से माल का भाड़ा युद्ध से पहले 70-75 डॉलर प्रति टन था, अब लगभग 140 डॉलर प्रति टन हो गया। साथ ही बीमा लागत भी बढ़ी, जिससे कुल आयात और महंगा हुआ। बीते सप्ताह सरसों की आवक 14 लाख बोरी से घटकर लगभग 10 लाख बोरी रह गई। किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से भी अधिक मूल्य पा रहे हैं, इसलिए माल रोक-रोक कर बेच रहे हैं।

इसने घरेलू बाजार में कीमतों को और बढ़ावा दिया। सूत्रों ने बताया कि बीते सप्ताह सरसों दाना 250 रुपये के सुधार के साथ 6,950-6,975 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। दादरी मंडी में बिकने वाला सरसों तेल 700 रुपये के सुधार के साथ 14,600 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल का भाव क्रमशः 80-80 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 2,430-2,530 रुपये और 2,430-2,575 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाने और सोयाबीन लूज के थोक भाव क्रमशः 50-150 रुपये की तेजी के साथ क्रमशः 5,700-5,750 रुपये और 5,300-5,450 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुए। इसी प्रकार, दिल्ली में सोयाबीन तेल 750 रुपये के सुधार के साथ 16,300 रुपये प्रति क्विंटल, इंदौर में सोयाबीन तेल 800 रुपये के सुधार के साथ 15,700 रुपये और सोयाबीन डीगम तेल का दाम 1,250 रुपये के सुधार के साथ 13,200 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।मूंगफली तिलहन का दाम भी 250 रुपये के सुधार के साथ 7,250-7,725 रुपये क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 650 रुपये के सुधार के साथ 17,550 रुपये क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 90 रुपये के सुधार के साथ 2,770-3,070 रुपये प्रति टिन पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में कारोबारी धारणा में आम मजबूती के रुख के अनुरूप, सीपीओ तेल का दाम 550 रुपये के उछाल के साथ 13,600 रुपये प्रति क्विंटल, पामोलीन दिल्ली का भाव 650 रुपये के उछाल के साथ 15,400 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल का भाव भी 650 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 14,350 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

चालू वित्त वर्ष के पहले 10 माह में कोयला आयात घटकर 21.31 करोड़ टन हुआ रिपोर्ट

चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-जनवरी के दौरान गैर-कोकिंग कोयले का आयात 12.78 करोड़ था

नई दिल्ली ।

चालू वित्त वर्ष के पहले 10 माह (अप्रैल-जनवरी) के दौरान देश का कोयला आयात 4.2 प्रतिशत घटकर 21.31 करोड़ टन रहा है। समुद्री मार्ग से ढुलाई महंगी होने के कारण अभी कोयला आयात कमजोर ही रहने की संभावना है। आयात में गिरावट से पता चलता है कि देश कोयला उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, जबकि घरेलू उत्पादन बढ़ रहा है। हालांकि, भू-राजनीतिक तनाव की वजह से आपूर्ति में आई बाधा की वजह से वैश्विक स्तर पर तापीय कोयले की कीमतें चढ़ रही हैं। बी2बी ई-कॉमर्स मंच एमजंक्शन सर्विसेज लि मिटेड के आंकड़ों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-जनवरी के दौरान, गैर-कोकिंग कोयले का आयात 12.78 करोड़ था, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि के 14.11 करोड़ टन के आंकड़े से कम है। एमजंक्शन सर्विसेज सेल और टाटा स्टील का संयुक्त उद्यम है। अप्रैल-जनवरी, 2025-26 के दौरान कोकिंग कोयले का आयात 5.03 करोड़ टन रहा, जो एक साल पहले इसी अवधि में 4.58 करोड़ टन था। जनवरी में देश का कोयला आयात 22.1 प्रतिशत घटकर 1.66 करोड़ टन रह गया, जो पिछले वित्त वर्ष के इसी महीने में 2.13 करोड़ टन रहा था।

जनवरी में हुए कुल आयात में से, गैर-कोकिंग कोयले का हिस्सा 94.5 लाख था, जो पिछले साल जनवरी के आंकड़े 1.23 करोड़ टन से कम है। कोकिंग कोयले का आयात 42.3 लाख था, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में यह 52.3 लाख टन रहा था।

एआईडीए की 20 फीसदी से अधिक एथनॉल मिश्रण आपूर्ति की पेशकश

- कच्चे तेल पर निर्भरता घटाने का लक्ष्य

नई दिल्ली।

ऑल इंडिया डिस्टिलर्स एसोसिएशन (एआईडीए) ने भारत सरकार को पत्र लिखकर पेट्रोल में 20 प्रतिशत से अधिक एथनॉल (ई20 से ऊपर) मिलाने की अपनी आपूर्ति की पेशकश की है। संघ का मानना है कि इससे देश की कच्चे तेल पर निर्भरता कम होगी और तेल की बढ़ती कीमतों से उत्पन्न आर्थिक दबाव को कम किया जा सकेगा। एआईडकि की एक वे रिष्ट अे धिकारी ने पत्र में बताया कि भारत ने अपना ई 20 एथनॉल मिश्रण लक्ष्य 2025 से पहले ही पूरा कर लिया है। यह लक्ष्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार द्वारा तय किया गया था, ताकि ईंधन आयात बिल घटाया जा सके और वातावरण में उत्सर्जन कम किया जा सके। संघ ने सरकार से आग्रह किया है कि एथनॉल मिश्रण की जरूरत को धीरे-धीरे 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाया जाए। एआईडीए ने यह भी कहा कि भारत ब्राजील की तरह फ्लेक्स-ईंधन वाहन लाने पर विचार करे। साथ ही घरेलू और वाणिज्यिक उपयोग के लिए एथनॉल आधारित कुकिंग स्टोव को बढ़ावा दिया जाए और डीजल में एथनॉल मिश्रण के विकल्प तलाशे जाएं।

स्कोडा ऑटो का 2026 में बिक्री में 12 प्रतिशत की वृद्धि का लक्ष्य

- पिछले वर्ष कंपनी की बिक्री में लगभग 100 फीसदी वृद्धि हुई थी

नई दिल्ली ।

स्कोडा ऑटो इंडिया ने 2025 में लगभग 72,000 वाहन बेचे। ब्रांड निदेशक ने बताया कि पिछले वर्ष कंपनी की बिक्री में लगभग 100 फीसदी वृद्धि हुई थी। हालांकि, उच्च आधार के कारण हर साल इतनी तेजी से वृद्धि व्यावहारिक नहीं है। 2026 में कंपनी कम से कम 10-12 फीसदी वृद्धि का लक्ष्य लेकर चल रही है। कंपनी ने अपने मध्यम आकार के एसयूवी कुशाक का नया संस्करण पेश किया है। इसके साथ ही काइलैक श्रृंखला में दो नए संस्करण और दो नई कीमतें शामिल की गई हैं। अगले कुछ महीनों में कोडिएक और स्लाविया मॉडलों में बदलाव किए जाएंगे। काइलैक स्पोर्ट्स लाइन का नया संस्करण अगस्त-सितंबर 2026 में बाजार में आएगा। स्कोडा अब भारत में सातवें नंबर का ब्रांड है, किआ इंडिया के बाद। ब्रांड का लक्ष्य है

बाजार में आगे बढ़ना और अपने उत्पाद पोर्टफोलियो के माध्यम से बिक्री को बढ़ाना। ब्रांड निदेशक ने कहा कि एक लाख वाहन की सालाना बिक्री का लक्ष्य भविष्य में हासिल करना चाहेंगे, लेकिन 2026 में यह नहीं होगा।

जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर ईवी विंडसर की बिक्री बढ़ाने गैर-महानगरों पर देती रहेगी ध्यान

अक्टूबर 2024 से फरवरी 2026 तक भारत में कुल 1,00,000 इलेक्ट्रिक वाहन बेचे

नई दिल्ली ।

जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया का सबसे ज्यादा बिकने वाला इलेक्ट्रिक वाहन एमजी विंडसर अक्टूबर 2024 में पेश किया गया था। अब तक इसकी कुल बिक्री लगभग 65,000 इकाइयां हो चुकी हैं, जिसमें चार महानगरों दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई का हिस्सा केवल 30 फीसदी है, जबकि शेष 70 फीसदी बिक्री गैर-महानगर इलाकों से हुई है। कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार विंडसर ने गैर-महानगर शहरों में ईवी स्वीकार्यता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है।

कंपनी के एक वाणिज्यिक अधिकारी ने कहा कि ईवी की शुरुआत में बिक्री महानगरों तक ही सीमित थी। मुख्य कारण कम जागरूकता और आम ग्राहकों के लिए उपयुक्त उत्पाद का अभाव था।

उन्होंने बताया कि विंडसर के आने से यह स्थिति बदल गई और अब गैर-महानगर इलाकों में ईवी अपनाने की दर तेजी से बढ़ रही है। कंपनी अपने मजबूत नेटवर्क और ग्राहक संपर्क के माध्यम से इन क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ा रही है।

अक्टूबर 2024 से फरवरी 2026 तक भारत में कंपनी ने

कुल 1,00,000 इलेक्ट्रिक वाहन बेचे हैं। इसके अलावा वर्ष 2025 में कुल बिक्री 70,554 इकाइयों तक बढ़ी, जो पिछले साल की तुलना में 19 फीसदी अधिक है।

इस साल कंपनी चार नए मॉडल लॉन्च करने की योजना बना रही है,

जिनमें एक प्लग-इन हाइब्रिड एसयूवी भी शामिल है। कंपनी का लक्ष्य गैर-महानगर इलाकों में ईवी को और लोकप्रिय बनाना और अपने बिक्री नेटवर्क का विस्तार करना है।

सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों में से पांच का बाजार पूंजीकरण 1.02 लाख करोड़ घटा

- शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों में से पांच के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान में एचडीएफसी बैंक रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में जहां एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), बजाज फाइनेंस और हिंदुस्तान यूनिलीवर के बाजार पूंजीकरण में गिरावट आई, वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई), इन्फोसिस और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की बाजार हैसियत बढ़ गई। शीर्ष 10 में पांच कंपनियों का बाजार मूल्यांकन कुल 1,02,771.87 करोड़ रुपये कम हो गया। सप्ताह के दौरान एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 56,124.48 करोड़ रुपये घटकर 12,01,267.28 करोड़ रुपये रह गया।

हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 18,009.62 करोड़ रुपये घटकर 4,89,631.32 करोड़ रुपये रह गई।बजाज फाइनेंस के पूंजीकरण में 15,338.42 करोड़ रुपये की कमी आई और यह 5,16,715.12 करोड़ रुपये पर आ गया। टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 7,127.63 करोड़ रुपये घटकर 8,64,940 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 6,171.72 करोड़ रुपये घटकर 8,91,673.06 करोड़ रुपये रह गया। इस रुख के विपरीत रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 45,942.75 करोड़ रुपये बढ़कर 19,14,235.92 करोड़ रुपये हो गया।

भारती एयरटेल की बाजार हैसियत 24,462.03 करोड़ रुपये बढ़कर 10,52,893.75 करोड़ रुपये और एसबीआई का मूल्यांकन 10,707.52 करोड़ रुपये बढ़कर 9,76,968.57 करोड़ रुपये रहा।एलआईसी का बाजार पूंजीकरण 2,624.88 करोड़ रुपये बढ़कर 4,91,610.45 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

इन्फोसिस की बाजार हैसियत 2,473.79 करोड़ रुपये बढ़कर 5,08,789.37 करोड़ रुपये हो गई। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, एसबीआई, आईसीआईसीआई बैंक, टीसीएस, बजाज फाइनेंस, इन्फोसिस, एलआईसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड का स्थान रहा।

कोर सेक्टर की रफ्तार धीमी, फरवरी में ग्रोथ घटकर 2.3 फीसदी रह गई

चालू वित्त वर्ष 2025-26 के पहले 11 महीनों में औसत वृद्धि 2.9 प्रतिशत रही

मुंबई ।

भारत के कोर इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर की वृद्धि दर में फरवरी 2026 में तेज गिरावट दर्ज की गई है। यह ग्रोथ जनवरी के 4.7 प्रतिशत से घटकर महज 2.3 प्रतिशत रह गई, जो स्पष्ट रूप से आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती का संकेत देती है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 के पहले 11 महीनों (अप्रैल-फरवरी) में कोर सेक्टर की औसत वृद्धि 2.9 प्रतिशत रही, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 4.4 प्रतिशत थी। इससे संकेत मिलता है कि इस साल प्रदर्शन पिछले छह वर्षों में सबसे कमजोर रह सकता है। आठ प्रमुख कोर सेक्टर में से फरवरी में पांच में वृद्धि दर्ज हुई, लेकिन छह सेक्टरों की गति जनवरी की तुलना में धीमी पड़ गई। सबसे अधिक दबाव ऊर्जा क्षेत्र में देखा गया। रिफाइनरी उत्पादों में 1 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि क्रूड ऑयल उत्पादन लगातार छठे महीने घटकर 5.2 प्रतिशत कम हो गया। प्राकृतिक गैस उत्पादन भी 20वें महीने गिरते हुए 5 प्रतिशत नीचे रहा। बिजली उत्पादन की वृद्धि दर भी घटकर 0.5 प्रतिशत रह गई, जो तीन महीनों का निचला स्तर है। हालांकि, सीमेंट और स्टील सेक्टर ने कुछ राहत दी। सीमेंट में 9.3 प्रतिशत और स्टील में 7.2 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। विशेषज्ञों के अनुसार, कोर सेक्टर का औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में लगभग 40 प्रतिशत योगदान होता है, इसलिए इसकी धीमी रफ्तार का असर आईआईपी पर भी पड़ेगा। फरवरी में आईआईपी वृद्धि दर घटकर करीब 4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो जनवरी में 4.8 प्रतिशत थी। यह गिरावट ऐसे समय में आई है जब वैश्विक अनिश्चितताएं बढ़ रही हैं, जिससे आगे आर्थिक दबाव बढ़ने की आशंका है।

तेलंगाना पर दिसंबर 2025 तक आठ लाख करोड़ का कर्ज रिपोर्ट

राज्य और उसकी कंपनियों ने 3.19 लाख करोड़ रुपये के नए कर्ज लिए

हैदराबाद । तेलंगाना पर कुल कर्ज दिसंबर 2025 के अंत तक आठ लाख करोड़ रुपये था। राज्य सरकार द्वारा जारी की गई सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट-2026 से यह जानकारी मिली है। इसमें उसकी इकाइयों का कर्ज और सरकारी गारंटी भी शामिल है। राज्य सरकार ने कहा कि दिसंबर, 2023 में जब कांग्रेस सत्ता में आई थी, उस समय से लेकर 2025 में उसी महीने तक राज्य और उसकी इकाइयों का कुल कर्ज 3,19,179 करोड़ रुपये था, जिसमें से पुनर्भुगतान (मूलधन और ब्याज) 3,04,202 करोड़ रुपये था। रिपोर्ट कहती है कि कांग्रेस सरकार के लगभग ढाई साल के कार्यकाल के दौरान उठाए गए कर्ज से पता चलता है कि इसका एक बड़ा हिस्सा हिस्सा मौजूदा कर्ज चुकाने में इस्तेमाल किया गया। इसकी वजह यह है कि दिसंबर, 2023 से पहले के समय से राज्य के ऊपर काफी कर्ज था। इसमें कहा गया है कि 31 दिसंबर, 2025 तक कुल बकाया कर्ज 8,00,805 करोड़ रुपये था, लेकिन बकाया देनदारियों में बढ़ोतरी को बड़े और ज़रूरी ब्याज भुगतान के संदर्भ में समझने की ज़रूरत है। यह बहुत ज़्यादा पुराने कर्ज की वजह से है।

ब्याज चुकाने के साथ-साथ मूलधन का बड़ा भुगतान किया गया। इस समय के दौरान, राज्य और उसकी कंपनियों ने 3.19 लाख करोड़ रुपये के नए कर्ज लिए। इसी समय में, मूलधन और ब्याज के लिए 3.04 लाख करोड़ रुपये का भुगतान किया गया, जिसमें मूलधन के लिए 1.90 लाख करोड़ रुपये और ब्याज के लिए 1.14 लाख करोड़ रुपये का भुगतान शामिल हैं।

तेलंगाना का 2025-26 के लिए राज्य सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) (शुरुआती अग्रिम अनुमान) मौजूदा कीमतों पर 17.82 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है।

यह सालाना 10.7 प्रतिशत की वृद्धि है।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के पहले अग्रिम अनुमान में राष्ट्रीय स्तर पर वृद्धि दर आठ प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आईपीएल में 339 रन बनाते ही 9000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बना जायंगे विराट

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल के 19 वें सत्र में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आसीबी) के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली एक ऐसा रिकार्ड अपने नाम करने जा रहे है जहां तक कोई और बल्लेबाज नहीं पहुंच पाया है। आईपीएल का 19वां सीजन 28 मार्च से शुरू हो रहा है। आईपीएल 2026 का पहला ही मुकाबला आरसीबी और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच 28 मार्च को खेला जाना है। इस सत्र में विराट कोहली 339 रन बनते ही आईपीएल लीग में 9000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बन जायेंगे।

दो बार ऑरेंज कैप विजेता विराट कोहली के लिए ये मुश्किल भी नहीं है। वह हमेशा ही आईपीएल में 500 से अधिक रन बनाते आये हैं। ऐसे में वह इस बार लीग के इतिहास में 9000 रन बनाने वाले वह पहले बल्लेबाज बन जाएंगे। कोहली का पिछले तीन सत्र में औसत 53 से ऊपर रहा है विराट ने साल 2023 में 53.25 की औसत से 639, 2024 में 61.75 की औसत से 741, और 2025 में 54.75 की औसत से 657 रन बनाए थे।

कोहली के पिछली बार 2025 में किए गए प्रदर्शन की आरसीबी को चैंपियन बनाने में अहम भूमिका रही है। साल 2008 से आरसीबी के लिए खेल रहे विराट ने 267 मैचों में 39.55 की औसत और 132.86 की स्ट्राइक रेट से 8 शतक और 63 अर्धशतक लगाते हुए 8661 रन बनाए हैं। विराट लीग में 8,000 रन पूरा करने वाले भी एकमात्र बल्लेबाज हैं। साथ ही, लीग में सर्वाधिक शतक का रिकॉर्ड भी उनके नाम ही है.वहीं दूसरे नंबर पर रोहित शर्मा हैं। रोहित ने 272 मैचों की 267 पारियों में 2 शतक और 47 अर्धशतक लगाते हुए 7046 रन बनाए हैं। वहीं शतक के मामले में जोस बटलर दूसरे नंबर पर हैं। बटलर के नाम आईपीएल में 7 शतक हैं। बटलर के पास इस सत्र में शतकों के मामले में कोहली को पीछे करने का अवसर होगा।

बिहार में अब खेल प्राथमिकता बन गए हैं : ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा

पटना (एजेंसी)। ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा ने रविवार को कहा कि बिहार में अब खेल प्राथमिकता बन गए हैं और उन्होंने प्रदेश में बुनियादी ढांचा बनाने के लिए राज्य सरकार की तारीफ की। प्रदेश सरकार और स्पोर्टस स्टार द्वारा आयोजित बिहार खेल कांक्लेव से इतर पत्रकारों से बातचीत में बिंद्रा ने कहा, 'बिहार में जिस तरह खेलों का विकास हो रहा है, वह काबिले तारीफ है। बिहार की खेलमंत्री (श्रेयसी सिंह) निशानेबाजी में मेरी साथी थी। वह खेलों के विकास के लिये प्रतिबद्ध है।'

बीजिंग ओलंपिक 2008 में 10 मीटर एयर राइफल में स्वर्ण पदक जीतने वाले बिंद्रा ओलंपिक की व्यक्तिगत स्पर्धा में पीला तमगा जीतने वाले पहले भारतीय हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे यह देखकर खुशी हो रही है कि बिहार में अब खेल प्राथमिकता बन गए हैं। मैं प्रदेश में और देश में खेलों के विकास के सफर के लिए सभी को शुभकामना देता हूं।'

केंद्रीय खेल और युवा कार्य राज्यमंत्री रक्षा खडसे ने कहा, 'पिछले पांच छह साल में बिहार में खेलों के क्षेत्र में हुआ विकास कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। प्रदेश सरकार ने मनरेगा योजना की मदद से ग्रामीण इलाकों में छोटे मैदान और स्टेडियम बनाए। उससे सीखते हुए हमने वीबी जी राम जी अधिनियम के तहत देश भर में उसी तर्ज पर स्टेडियम और छोटे मैदान बनाने के लिए बजटीय आवंटन किया है।'

उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों को खेलों के विकास के लिये मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'खेल राज्य का विषय है और केंद्र सक्रिय रूप से पूरा साथ दे रहा है। खेलो भारत मिशन के तहत प्रदेशों से मशविरा करके खेलों के पूरे इकोसिस्टम में बदलाव किया जा रहा है।'

वार्न सहित ये क्रिकेटर अपने करियर में नहीं बना पाये कोई शतक

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज स्पिनर शेन वार्न एक गेंदबाज होने के साथ ही निचले क्रम पर अच्छी बल्लेबाजी भी करते थे पर अपने करियर में वह एक भी टेस्ट शतक नहीं लगा पाये। एक बार वह शतक के बेहद करीब आ गये थे पर लगा नहीं पाये और 99 रनों पर आउट हो गये। वार्न सहित पांच क्रिकेटर ऐसे हैं जो अपने करियर में काफी रन बनाने के बाद भी शतक नहीं लगा पाये। इनमें श्रीलंका के निराशन डिकवेला, मिचेल स्टार्क, न्यूजीलैंड के टिम साउदी और भारत के चेतन चौहान है।

वॉर्न को दुनिया के महानतम लेग-स्पिनर के रूप में जाना जाता है पर वह निचले क्रम के एक बेहद उपयोगी और आक्रामक बल्लेबाज भी रहे थे। इस बात का पता इससे चलता है कि वॉर्न ने अपने करियर में 145 टेस्ट मैचों में 12 अर्धशतक लगाकर 3154 रन बनाये हैं हालांकि वह एक बार भी शतक पूरा नहीं कर पाये। विश्व का कोई दूसरा स्पिनर इतने रन नहीं बना पाया है। वॉर्न साल 2001 में न्यूजीलैंड के खिलाफ पर्थ टेस्ट में शतक के बेहद करीब पहुंचे थे। तब वॉर्न ने जबरदस्त बल्लेबाजी करते हुए 99 रन बना लिए थे पर डेनियल विटोरी की गेंद पर एक बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में कैच हो गये थे। बाद में रिप्ले में देखा गया कि वह गेंद 'नो-बॉल' थी, लेकिन उस समय तकनीक अच्छी न होने से वॉर्न को रिव्यू नहीं मिला। वॉर्न उस पारी में ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज थे। आठवें नंबर पर खेली वॉर्न की इस पारी से टीम हार से बच गयी थी।

टेस्ट में बिना शतक सबसे ज्यादा रन बनाने वाले 5 बल्लेबाजों में दूसरे नंबर पर श्रीलंका के निरोशन डिकवेला हैं। डिकवेला ने अपने करियर में 2757 रन बनाये हैं और उनका सबसे अधिक स्कोर 96 रन रहा है। वहीं तीसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के मिचेल स्टार्क ने - 2478 रन बनाये हैं। उनका सबसे अधिक स्कोर 99 रन रहा है। वहीं न्यूजीलैंड के टिम साउदी ने 2245 जबकि भारत के चेतन चौहान के नाम 2084 रन हैं। वहीं गेंदबाजी में कई ऐसे रिकॉर्ड हैं, जिन्हें तोड़ना आज के दौर में लगभग नामुमकिन लगता है। वॉर्न के नाम टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक 708 विकेट हैं। मुथैया मुरलीधरन (800) के बाद वे दुनिया के दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। वे 700 विकेट का आंकड़ा छूने वाले दुनिया के पहले गेंदबाज थे। साल 2005 में वॉर्न ने टेस्ट क्रिकेट में एक साल में 96 विकेट लिए थे. यह आज भी एक कैलेंडर वर्ष में किसी भी गेंदबाज द्वारा लिए गए सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट का वर्ल्ड रिकॉर्ड है। टेस्ट और वनडे मिलाकर वॉर्न के नाम कुल 1001 विकेट हैं।

केकेआर के तेज गेंदबाज आकाशदीप आईपीएल से बाहर हुए

-मधवाल को मिल सकता है अवसर

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के तेज गेंदबाज आकाश दीप चोटिल होने के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 से बाहर हो गये हैं। ऐसे में केकेआर की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। आकाशदीप जैसे बेहतरीन गेंदबाज की कमी पूरी करना आसान नहीं है। इसी कारण अब टीम प्रबंधन नए विकल्प तलाशने में लग गयी है। इसी कारण अब उसकी नजरें तेज गेंदबाज़ आकाश मधवाल को शामिल करने पर लगी हैं। आकाश ने पूर्व में मुम्बई इंडियंस की ओर से खेला है। आकाश दीप को केकेआर ने प्रमुख ने तेज़ गेंदबाज़ के तौर पर रखा था पर वह फिट नहीं होने से लीग से बाहर हो गये हैं। वह पीठ के निचले हिस्से में खिंचाव से परेशान हैं।

इसी कारण उन्हें करीब तीन महीने तक खेल से दूर रहना पड़ेगा। इससे साफ हो गया है कि वह इस पूरे सत्र में नहीं खेलेंगे।

केकेार का को इस प्रकार दूसरा झटका लगा है। इससे पहले उनके तेज़ गेंदबाज़ हर्षित राणा भी चोटिल होने के कारण सत्र से बाहर हो गये थे। अपने दो प्रमुख गेंदबाजों के खोने का प्रभाव मैच में नजर आयेगा। राणा को विश्वकप से पहले ही अभ्यास मैच के दौरान चोट लगी थी, जिसके बाद से ही वह टीम से बाहर हैं। दो तेज गेंदबाजों के बाहर होने से केकेआर की गेंदबाजी इकाई काफी कमजोर नजर आ रही है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार केकेआर अब मधवाल को आकाश दीप के विकल्प के तौर पर टीम में शामिल करने की योजना बना रही है। मधवाल पहले मुंबई इंडियंस का हिस्सा रहे हैं और आईपीएल में अपने प्रदर्शन से पहचान बना चुके हैं। खासकर 2023 के एलिमिनेटर मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ उन्होंने शानदार गेंदबाजी की थी। विकेट लेने की क्षमता इस गेंदबाज को विशेष बनाती है।

वहीं इसके अलावा केकेआर युवा आरएस अंबरीश को भी टीम में शामिल करने पर विचार कर रही है। अंबरीश हाल ही में अंडर-19 विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा थे और उन्होंने टूर्नामेंट में 11 विकेट लेकर अपनी क्षमता साबित की थी। टीम ने पहले ही लीग से हटाये गये बांग्लादेशी गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान की जगह जिम्बाब्वे के ब्लेसिंग मुज़रबानी को शामिल किया था।

आईपीएल में वापसी के लिए श्रेयस को बढ़ाना पड़ा वजन

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब किंग्स टीम के कप्तान श्रेयस अय्यर ने कहा है कि वह आईपीएल सत्र के लिए तैयार हैं। श्रेयस ने कहा कि कि वह अपनी चोट से उबर गये हैं और नए सत्र के लिए तैयार हैं। इस दौरान श्रेयस ने उस समय को याद किया जब ऑस्ट्रेलिया में लगी चोट के कारण उनका वजन भी काफी कम हो गया था। जिसे फिर से बढ़ाने के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। श्रेयस को अक्टूबर में भारत की ऑस्ट्रेलिया के बीच हुई एकदिवसीय सीरीज के दौरान पेट में गंभीर चोट लग गई थी। जिसके बाद उन्हें आईसीयू में भी रहना पड़ा था। इसी कारण वह कई हफ्तों तक टीम से बाहर रहे और उन्हें रिहैब से भी गुजरना पड़ा। वहीं अब श्रेयस ने कहा है कि वह दौर उनके लिए काफी कठिन था। साथ ही कहा, 'चोट के बाद वापसी करना हमेशा ही कठिन होता है। मेरा वजन भी तकरीबन 7 किलो कम हो गया था पर राहत की बात ये रही कि दो माह बाद मैं फिर से फिट हो गया।'

इस बल्लेबाज ने कहा, ' 7 किलो वजन दोबारा बढ़ाना उनके लिए काफी कठिन काम था। मुझे चुनौतियां पसंद हैं और ये भी एक बड़ी चुनौती थी जिसे निकलना था। मैं खुश हूं कि उस दौर से निकलकर अब फिर से अपनी टीम से खेलने तैयार हूं।' श्रेयस को अक्टूबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय के दौरान चोट लगी थी।

अय्यर ने इस साल की शुरुआत में वापसी की थी, इससे उन्हें आईपीएल की तैयारी करने का अवसर मिल गया। इस खिलाड़ी का कहना है कि अब उनका लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन कर अपनी टीम को ट्रॉफी जिताना रहेगा।

लिवरपूल और चेल्सी पर चैंपियंस लीग में जगह बनाने की दौड़ से बाहर होने का खतरा

लिवरपूल । लगातार खराब प्रदर्शन के कारण लिवरपूल और चेल्सी के लिए प्रीमियर लीग फुटबाल टूर्नामेंट का खिताब तो दूर की कौड़ी बनता ही जा रहा है, बल्कि उन पर अब चैंपियंस लीग में जगह बनाने की दौड़ से बाहर होने का खतरा भी मंडरा रहा है।

लिवरपूल को इस सत्र में प्रीमियर लीग में 10वीं जबकि चेल्सी को 10 दिनों में लगातार चौथी हार का सामना करना पड़ा है। शनिवार को ब्राइटन के हाथों 2-1 से मिली हार से लिवरपूल का अपने खिताब का बचाव करने की उम्मीदों को करारा झटका लगा है। मौजूदा चैंपियन टीम पिछले तीन मैच में जीत हासिल नहीं कर पाई है। इसके कुछ घंटों बाद चेल्सी को एवर्टन ने 3-0 से हरा दिया। लिवरपूल लीग में पांचवें स्थान पर बना हुआ है। वह चेल्सी से एक अंक और एक स्थान आगे है। प्रीमियर लीग में शीर्ष पांच में रहने वाली टीम ही अगले सत्र के लिए चैंपियंस लीग में जगह बनाएंगी।

जब मजाकिया अंदाज में बोले वैभव, दो-तीन हजार रन बनाना चाहता हूं

जयपुर । राजस्थान रॉयल्यस के उभरते हुए बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने एक कार्यक्रम में अपनी हाजिर जवाबी से सभी को हंसा दिया। वैभव यहां राजस्थान रॉयल्स के एक कार्यकम में शामिल हुए थे। इस दौरान वहां अन्य क्रिकेटर और टीम के प्रशंसा भी उपस्थित थे। इसी दौरान जब एक मीडियाकर्मी ने वैभव से पूछा कि वह इस बार आईपीएल में कितने रन बनाना चाहते हैं तो वैभव ने हल्के फुल्के अंदाज में कहा कि ऐसा सवाल मत पूछो नहीं तो मैं कह दूंगा कि मुझे दो तीन हजार रन बनाने हैं। इसपर सभी हंस पड़े। इसके बाद वैभव ने कहा कि कहा कि वह व्यक्ति प्रदर्शन नहीं बल्कि टीम के लिए खेलने पर भरोसा करते हैं। उनका लक्ष्य केवल बेहतर प्रदर्शन करना और टीम को जीत दिलाना रहेगा। वैभव ने कहा कि ये पहले से नहीं बताया जा सकता है कि कितने रन बनाये जा सकते हैं। वह सिर्फ अपने काम पर ध्यान देंगे और टीम के लिए मैच जिताने वाली पारियां खेलेंगे। उनका मुख्य लक्ष्य टीम को जीत दिलाना है न कि अपना रिकार्ड बनाना। इस बल्लेबाज ने पिछल बार आईपीएल में सबसे कम उम्र में शतक लगाने का रिकॉर्ड बनाया था। तब सिर्फ 35 गेंदों में शतक लगाकर सभी को हैरान किया था। इसके अलावा अंडर-19 वर्ल्ड कप 2026 के फाइनल में 175 रन की पारी खेलकर भारत को चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। इस बार टीम में बदलाव के बाद वैभव को शीर्ष क्रम में अधिक अवसर मिल सकते हैं और संजू सैमसन के नहीं होने के कारण उन्हें पारी की शुरुआत का भी अवसर मिल सकता है।

मियामी ओपन: पार्क्स को हराकर कोको गॉफ ने अगले दौर में जगह बनाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोको गॉफ ने शानदार वापसी करते हुए अपनी हमवतन अमेरिकी खिलाड़ी एलिसिया पार्क्स को तीन सेटों में हराकर मियामी ओपन के राउंड ऑफ 16 में जगह बना ली है।

शुरुआत में मुश्किलों के बावजूद गॉफ ने मैच पर अपना दबदबा बनाए रखा और कई ब्रेक प्वाइंट्स बचाए। मियामी में गॉफ चौथी बार राउंड ऑफ 16 में पहुंचने में सफल रही हैं। 22 वर्षीय खिलाड़ी की कोशिश डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट में अपनी पहली बार क्वार्टर फाइनल में पहुंचने की होगी। गॉफ ने शुरुआती ब्रेक के साथ 2-0 की बढ़त बनाई लेकिन पार्क्स ने लगातार छह गेम जीतकर पहला सेट 6-2 से अपने नाम कर लिया। इसके बाद गॉफ ने जोरदार वापसी करते हुए मैच पर पूरी तरह से अपना दबदबा बना लिया और अगले 13 में से 12 गेम जीतकर 1 घंटे 50 मिनट में 2-6, 6-0, 6-1 से जीत हासिल की।

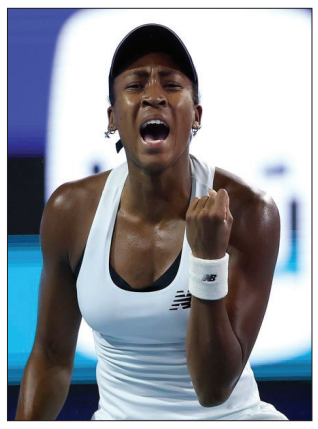

गॉफ ने अपनी जीत के बाद कहा, 'यह सच में बहुत मुश्किल था। वह बहुत अच्छा खेल रही थीं, और वह उन खिलाड़ियों में से हैं जिनका खेल कभी-कभी बहुत अच्छा होता है तो कभी-कभी बिल्कुल भी नहीं चलता। इसी वजह से आप एक ऐसी बारीक रेखा पर फंस जाते हैं जहां आपको आक्रामक भी रहना होता है लेकिन साथ ही उन्हें खेलने का मौका भी देना होता है। मुझे लगता है कि मैं इस मामले में थोड़ा ज्यादा ही दूसरी तरफ झुक गई थी। फिर दूसरे और तीसरे सेट में मैंने आक्रामक खेलने की कोशिश की। मैंने रिटर्न पर कुछ बदलाव किए, और मुझे लगता है कि उसी से फर्क पड़ा।'

2025 सीजन की शुरुआत के बाद से यह अमेरिकी खिलाड़ी की डब्ल्यूटीए स्तर पर पहला सेट हारने के बाद 11वीं जीत थी। इस आंकड़े के मामले में वह मैडिसन कीज और अनास्तासिया पोटापोवा के साथ बराबरी पर हैं। इसी समय-सीमा में, एक सेट से पिछड़ने के बाद सबसे ज्यादा जीत हासिल करने वालीं एकमात्र खिलाड़ी जेसिका पेगुला (13) हैं। इसके अलावा, साल 2000 के बाद जन्मी खिलाड़ियों में डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट्स में गॉफ सबसे ज्यादा जीत दर्ज करने के मामले में दूसरे नंबर पर हैं। उनके नाम 104 जीत हैं। गॉफ से आगे इगा स्वियातेक हैं, जिन्होंने डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट्स में 130 जीत दर्ज की हैं।

अब अगले राउंड में कोको गॉफ का मुकाबला सोराना सिर्स्टिया से होगा, जहां उनकी नजर डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट में अपने पहले क्वार्टर फाइनल में पहुंचने पर होगी। टूर पर अपना आखिरी सीजन खेल रहीं रोमानिया की अनुभवी खिलाड़ी सिर्स्टिया ने 21वीं वरीयता प्राप्त एलिस मर्टेंस को 6-3, 6-2 से हराया। गॉफ और सोराना का सामना अब तक एक बार हुआ है। 2022 ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे दौर में गॉफ सोराना पर भारी पड़ी थीं।

मियामी ओपन : जैनिक सिनर ने दामिर जुमहुर को हराया, जोकोविच के रिकॉर्ड की बराबरी की

मियामी । जैनिक सिनर ने हार्ड रॉक स्टेडियम में खेले गए मियामी ओपन के पहले राउंड के मुकाबले नें दामिर जुमहुर को 6-3, 6-3 से हराया। इस जीत के साथ सिनर ने दिग्गज नोवाक जोकोविच के एक रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। सिनर मैच में अपनी डिलीवरी से सिर्फ आठ अंक पीछे रह गए। नवंबर में पेरिस मास्टर्स और इंडियन वेल्स में अपने खिताबी जीत के बाद अब एटीपी मास्टर्स 1000 इवेंट्स में लगातार 24 सेट जीत नोवाक जोकोविच के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। उनके पास 30वीं सीड कोरेंटिन मौटेट के खिलाफ अपने तीसरे राउंड के मुकाबले का पहला सेट जीतकर जोकोविच से आगे निकलने का मौका होगा, जिन्होंने टॉमस माचाक को 6-0, 1-6, 6-4 से हराया था। जीत के बाद सिनर ने कहा, 'मुझे लगता है कि कभी-कभी स्कोरबोर्ड मायने रखता है। मेरे लिए, मैं एक खिलाड़ी के तौर पर बेहतर होने की कोशिश करता हूं और खुद को ज्यादा से ज्यादा मैच खेलने की स्थिति में रखता हूं। मैं हमेशा हर विरोधी के साथ एक जैसा बर्ताव करता हूं, कोर्ट पर आकर अच्छे रवैये के साथ अपना बेस्ट देने की कोशिश करता हूं और इसके लिए पूरी कोशिश करता हूं।' सिनर मियामी में अपना दूसरा खिताब जीतने की कोशिश कर रहे हैं। पूर्व में 2024 में वह चैंपियन रहे थे। इटैलियन के पास साउथ फ्लोरिडा में डिफेंड करने के लिए कोई एटीपी रैंकिंग पॉइंट नहीं है, जिससे उन्हें विश्व के नंबर 1 खिलाड़ी कार्लोस अल्काराज के साथ अपनी लड़ाई में और मोमेंटम बनाने का मौका मिल रहा है। इंडियन वेल्स में 2026 के लिए अपनी पहली ट्रॉफी उठाने के बाद, इटैलियन खिलाड़ी 2017 में रोजर फेडरर के बाद मशहूर 'सनशाइन डबल' पूरा करने वाले पहले खिलाड़ी बनने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी तरफ, अलेक्जेंडर शेवचेंको ने एटीपी मास्टर्स 1000 इवेंट में वापसी करते हुए जीत हासिल करके बेन शेल्टन को मियामी ओपन से बाहर कर दिया। अपने 6-7(3), 7-6(3), 6-3 के उलटफेर के साथ, कजाकिस्तानी ने तीसरी टॉप-10 जीत हासिल की और अपने होम स्टेट फ्लोरिडा में सबसे बड़े टूर्नामेंट में शेल्टन को 1-4 पर गिरा दिया।

धोनी बोले आईपीएल में हैरान कर सकता है युवा ऑलराउंडर प्रशांत वीर

जयपुर (एजेंसी)। चेन्नई (ईएमएस)। चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने युवा ऑलराउंडर प्रशांत वीर की जमकर प्रशंसा की है। प्रशांत को सीएसके ने आईपीएल नीलामी में 14.2 करोड़ रुपये में खरीदा था। इसी का एक वीडियो सीएसके ने जारी किया है।

इस वीडियो में धोनी युवा ऑलराउंडर प्रशांत की प्रशंसा करते हुए कहते हैं ये ऑलरांउडर लीग में अपने प्रदर्शन से सभी को हैरान कर सकता है। धोनी कभी कभार ही किसी खिलाड़ी की तारीफ करते हैं, इसलिए उनकी बात को काफी महत्व दिया जाता है। अभ्यास सत्र में जब प्रशांत वीर बल्लेबाजी कर रहे थे तब विकेट के पीछे से धोनी उनपर नजर रखे थे। वीर ने ऑफ साइड में शानदार शॉट लगाया, जिस पर धोनी ने तुरंत तारीफ करते दिखे। इसके बाद वीर ने एक शानदार स्कूप शॉट खेला, जिस पर भी धोनी ने बाउंड्री होने का इशारा किया। इसके बाद प्रशांत ने सीधा स्ट्रेट ड्राइव खेला, जिसे देखने के बाद धोनी ने उनकी जमकर सराहना की। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर आया है। प्रशंसकों ने भी इस युवा खिलाड़ी की जमकर प्रशंसा की है। सीएसके के खेमें में भी इससे उत्साह छाया हुआ है।

प्रशांत वीर उत्तर प्रदेश के युवा ऑलराउंडर हैं, जो बाएं हाथ के बल्लेबाज और स्पिन गेंदबाज हैं। वह आमतौर पर निचले मुध्यक्रम में बल्लेबाजी करते हैं। घरेलू क्रिकेट में अ अच्छे प्रदर्शन के बाद आईपीएल में उन्हें अवसर मिला है। मिनी ऑक्शन में वह 14.20 करोड़ में बिके थे। इस प्रकार वह आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे अनकैप्ड खिलाड़ियों में आ गये थे। प्राशांत ने अंडर-23 टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया था। उन्होंने 7 मैचों में 376 रन बनाए, जिसमें उनका औसत 94 और स्ट्राइक रेट 128.76 रहा।

आईपीएल में अब तक विकेटकीपर के तौर पर संगकारा का रिकार्ड बरकरार

मुम्बई (एजेंसी)। इस माह के अंत में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 19 सत्र शुरु होगा। जिससे भी नये-नये रिकार्ड बनेंगे। अब तक हुए सत्रों में कई ऐसे रिकार्ड बने हैं जो अब तक कोई नहीं तोड़ पाया है। अब देखना है कि वह रिकार्ड इस सत्र में टूटता है या नहीं ये रिकार्ड है। विकेट के पीछ पांच शिकार करन का जो श्रीलंका के दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज कुमार संगकारा के नाम है। यहां तक कि महेन्द्र सिंह धोनी भी इस रिकार्ड तक नहीं पहुंच पाये हैं। संगकारा ने आईपीएल के चौथे सत्र में ये रिकार्ड बनाया था। तब साल 2011 में डेक्कन चार्जर्स का मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) से था। वहीं डेक्कन चार्जर्स की कप्तानी और विकेटकीपिंग कुमार संगाकारा कर रहे थे। उस मैच में संगाकारा ने विकेटों के पीछे से एक के बाद एक बेहतरीन कैच लेकर रिकॉर्ड बना दिया। उन्होंने 5 कैच लिए। संगाकारा के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी अहम है, क्योंकि उन्होंने तिलकरत्ने दिलशान, विराट कोहली और एबी डीविलियर्स जैसे दिग्गजों के खिलाफ ये रिकार्ड बनाया था। चेन्नई सुपरकिग्स के विकेटकीपर धोनी को दुनिया का सबसे तेज विकेटकीपर माना जाता है, जिनके नाम 0.08 सेकंड में स्टंपिंग करने का विश्व रिकॉर्ड है। धोनी ने आईपीएल करियर में कई बार एक मैच में 4 खिलाड़ियों को पेवेलियन भेजा है पर पांच शिकार उन्होंने नहीं किये हैं।

संगाकारा ने तिलकरत्ने दिलशान, एबी डिविलियर्स, सौरभ तिवारी, जोहान वैन डेर वाथ और रायन निनन के विकेट लिए। संगाकारा की बेहतरीन विकेटकीपिंग के कारण चार्जर्स ने मुकाबला 33 रन से जीता। हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले गए आईपीएल 2011 के 11वें मुकाबले में डेक्कन चार्जर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 5 विकेट खोकर 175 रन बनाए थे। भरत चिप्ली ने 35 गेंदों में नाबाद 61 रन की पारी खेली। उनके अलावा सनी सोहेल ने 38 रन और कुमार संगाकारा ने 36 रन का बनाये। जेपी ड्यूमिनी ने 22 रन बनाए। वहीं विरोधी टीम की ओर से जहीर खान ने सर्वाधिक 3 विकेट लिए जबकि जोहान वैन डेर वाथ और रायन निनन ने 1-1 विकेट अपने नाम किया। इसके जवाब में आरसीबी निर्धारित ओवरों में 9 विकेट खोकर 142 रन ही बना सकी।

आईपीएल के एक सत्र में सबसे अधिक विकेट लेने का रिकार्ड है हर्षल और ब्रेवो के नाम

नई दिल्ली । इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 19वें सीजन इस माह के अंत में शुरु हो रहा है। ऐसे में अब तक हुए आईपीएल मुकाबलों और उनमें बने रिकार्डों को लेकर चर्चाएं होती रहती हैं। इसी में से एक रिकार्ड है सबसे अधिक विकेट का। अब तक कई गेंदबाजों ने आईपीएल में काफी विकेट लिए हैं पर किसी एक सत्र में सबसे अधिक विकेट की बात की जाये तो वह रिकाड अबतक संयुक्त रुप से दो गेंदबाजों हर्षल पटेल और ड्वेन ब्रावो नाम है। आरसीबी के हर्षल ने साल 2021 में बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए 15 मुकाबलों में कुल 32 विकेट लिए थे। उनका ये रिकार्ड अब तक कायम है अब देखना है कि इस सत्र में कोई गेंदबाज इसे तोड़ पाता है या नहीं। हर्षल ने आईपीएल 2021 में आरसीबी की ओर से खेलते हुए 15 मुकाबलों में 32 विकेट लिए थे। इस सत्र उन्होंने एक मुकाबले में 5 विकेट लिए थे। वहीं ड्वेन ब्रावो ने आईपीएल 2013 में चेन्नई सुपर किंग्स की तरफ से खेलते हुए 32 विकेट निकाले थे। ब्रावो ने 18 मुकाबलों में केवल 7.95 की इकोनॉमी से रन दिये किए थे। ब्रावो की बेहतरीन गेंदबाजी के बल पर चेन्नई सुपर किंग्स फाइनल तक पहुंचने में सफल रही थी। हालांकि, खिताबी मुकाबले में टीम को मुंबई इंडियंस के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था इसके अलावा दिल्ली कैपिटल्स की तरफ से खेलते हुए आईपीएल 2020 में कगिसो रबाडा ने 17 मुकाबलों में कुल 30 विकेट लिए थे ओर वह इस प्रकार दूसरे नंबर पर हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

23 वर्ष का सच्चा देश भक्त , इंकलाब जिंदाबाद, जय भगत

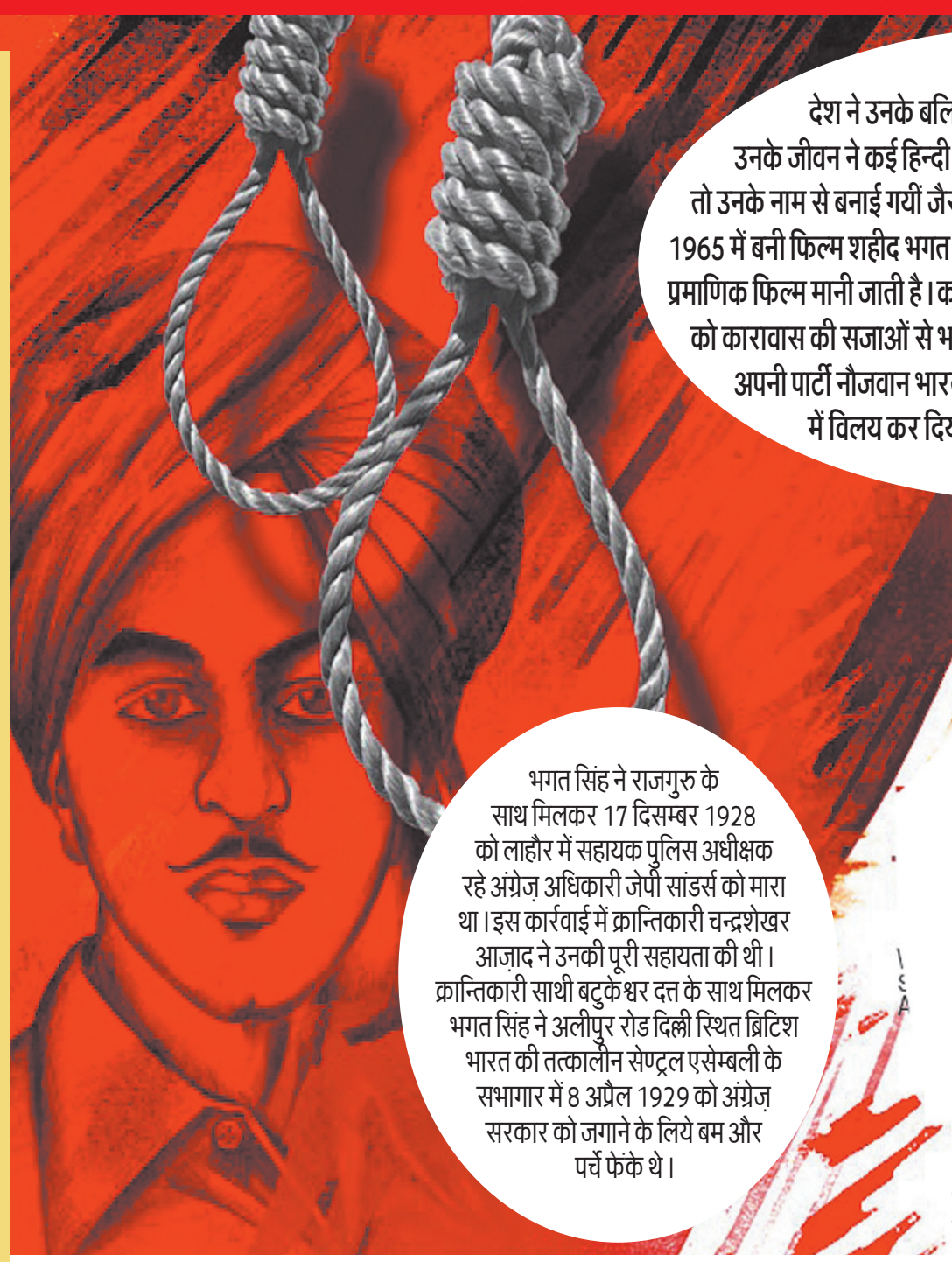

सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। उनके जीवन ने कई हिन्दी फ़िल्मों के चरित्रों को प्रेरित किया। कुछ फ़िल्में तो उनके नाम से बनाई गयीं जैसे – द लीज़ेंड ऑफ़ भगत सिंह। मनोज कुमार की सन् 1965 में बनी फिल्म शहीद भगत सिंह के जीवन पर बनायीं गयी अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रमाणिक फिल्म मानी जाती है। काकोरी कांड में 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया

भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज़ अधिकारी जेपी सांडर्स को मारा था। इस कार्रवाई में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने अलीपुर रोड दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज़ सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे।

काश..! आप आज भी होते

28 सितम्बर, 1907 से 23 मार्च 1931 (23 वर्ष की आयु में फाँसी)

जन्म स्थल :गाँव बंगा, जिला लायलपुर, पंजाब (अब पाकिस्तान में)
मृत्यु स्थल : लाहौर जेल, पंजाब (अब पाकिस्तान में)

भगत सिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगतसिंह ने देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श है। इन्होंने केन्द्रीय संसद (सेंट्रल असेम्बली) में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च, 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। उनके जीवन ने कई हिन्दी फ़िल्मों के चरित्रों को प्रेरित किया। कुछ फ़िल्में तो उनके नाम से बनाई गयीं जैसे - द लीज़ेंड ऑफ़ भगत सिंह। मनोज कुमार की सन् 1965 में बनी फिल्म शहीद भगत सिंह के जीवन पर बनायीं गयी अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रमाणिक फिल्म मानी जाती है। काकोरी कांड में 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। पहले लाहौर में साण्डर्स-वध और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन सभी बम धमाकों के लिए उन्होंने वीर सावरकर के क्रांतिदल अभिनव भारत की भी सहायता ली और इसी दल से बम बनाने के गुर सीखे। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक सिख परिवार था जिसने आर्य समाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। अधिकांश क्रांतिकारियों को देश प्रेम की प्रेरणा महर्षि दयानन्द के साहित्य व आर्य समाज से मिली। अमृतसर में 13 अप्रैल, 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी कांड में राम प्रसाद बिस्मिल सहित 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पण्डित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गये और उसे एक नया नाम दिया- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा,त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था। भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज़ अधिकारी जेपी सांडर्स को मारा था। इस कार्रवाई में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने अलीपुर रोड दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज़ सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ

उस समय भगत सिंह करीब 12 वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गांधी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिये रास्ता चुनने लगे। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण देश के तमाम नवयुवकों की भाँति उनमें भी रोष हुआ और अंतत: उन्होंने देश की स्वतंता के लिये क्रान्ति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। कुछ समय बाद भगत सिंह करतार सिंह सराभा के संपर्क में आये जिन्होंने भगत सिंह को क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने की सलाह दी और साथ ही वीर सावरकर की किताब 1857 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पढ़ने के लिए दी, भगत सिंह इस किताब से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने इस किताब के बाकी संस्करण भी छापने के लिए सहायता प्रदान की, जून 1924 में भगत सिंह वीर सावरकर से येरवडा जेल में मिले और क्रांति की पहली गुरु शिक्षा ग्रहण की, यही से भगत सिंह के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

लाला जी की मृत्यु का प्रतिशोध

1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिये भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिटेंण्डेण्ट स्कॉट को मारने की योजना सोची। सोची गयी योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकल को लेकर ऐसे बैठ गये जैसे कि वो ख़राब हो गयी हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गये। उधर चन्द्रशेखर आज़ाद पास के डीएवी स्कूल की चहारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे। 17 दिसंबर 1928 को करीब सवा चार बजे, स्काट की जगह, एएसपी सॉण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिसके तुरन्त बाद वह होश खो बैठा। इसके बाद भगत सिंह ने 3-4 गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तज़ाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आज़ाद ने उसे सावधान किया – आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।

2 साल जेल में

जेल में भगत सिंह ने करीब 2 साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहे एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेज़ी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था- मैं नास्तिक क्यों हूँ? जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हड़ताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

फ़ाँसी

23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की नहीं बल्कि राम प्रसाद बिस्मिल की जीवनी पढ़ रहे थे जो सिन्ध (वर्तमान पाकिस्तान का एक सूबा) के एक प्रकाशक भजन लाल बुकसेलर ने आर्ट प्रेस, सिन्ध से छापी थी। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था- ठहरिये! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले। फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले – ठीक है अब चलो।

अत्याचार बर्दाश्त नहीं किया

सुखदेव, राजगुरु तथा भगत सिंह के लटकाये जाने की ख़बर – लाहौर से प्रकाशित द ट्रिब्युन के मुख्य पृष्ठ पर। जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अन्दाजा लगता है। उन्होंने भारतीय समाज में लिपि (पंजाबी की गुरुमुखी व शाहमुखी तथा हिन्दी और अरबी एवम् उर्दू के सन्दर्भ में विशेष रूप से), जाति और धर्म के कारण आयी दूरियों पर दु:ख व्यक्त किया था। उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग पर किसी भारतीय के प्रहार को भी उसी सख्ती से सोचा जितना कि किसी अंग्रेज के द्वारा किये गये अत्याचार को। भगत सिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उद्विग्न हो जायेगी और ऐसा उनके जिन्दा रहने से शायद ही हो पाये। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफ़ीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था।

एसेम्बली में बम फेंकना

भगत सिंह यद्यपि रक्त पात के पक्षधर नहीं थे परन्तु वे कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों से पूरी तरह प्रभावित थे। यही नहीं, वे समाजवाद के पक्के पोषक भी थे। इसी कारण से उन्हें पूँजीपतियों की मजदूरों के प्रति शोषण की नीति पसन्द नहीं आती थी। उस समय चूँकि अँग्रेज ही सर्वेसर्वा थे तथा बहुत कम भारतीय उद्योगपति उन्नति कर पाये थे, अत: अँग्रेजों के मजदूरों के प्रति अत्याचार से उनका विरोध स्वाभाविक था। मजदूर विरोधी ऐसी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। सभी चाहते थे कि अँग्रेजों को पता चलना चाहिये कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में ऐसी नीतियों के प्रति आक्रोश है। ऐसा करने के लिये ही उन्होंने दिल्ली की केन्द्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनायी थी। भगत सिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अँग्रेजों तक उनकी आवाज़ भी पहुँचे। हालाँकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 8 अप्रैल, 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद न था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। पूरा हाल धुएँ से भर गया। भगत सिंह चाहते तो भाग भी सकते थे पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहें वह फाँसी ही क्यों न हो; अत: उन्होंने भागने से मना कर दिया। उस समय वे दोनों खाकी कमीज़ तथा निकर पहने हुए थे। बम फटने के बाद उन्होंने इंकलाब! – जिन्दाबाद!! साम्राज्यवाद! – मुर्दाबाद! का नारा लगाया और अपने साथ लाये हुए पर्चे हवा में उछाल दिये। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गयी और दोनों को गिरफ़्तार कर लिया गया।

शहीद भगत सिंह – महान क्रांतिकारी और राष्ट्र पुरुष

बड़ी खुशनसीब होगी वह कोख और गर्व से चौड़ा हो गया होगा उस बाप का सीना जिस दिन देश की आजदी के खातिर उसका लाल फांसी चढ़ गया था। हां, आज उसी माँ-बाप के लाल भगत सिंह का जन्?म दिवस है। आज देश भगत सिंह के जन्?म दिन की सौ ?वीं वर्षगांठ मना रहा है। भगत सिंह का जन्?म 28 सितंबर 1907 में एक देश भक्?त क्रांन्तिकारी परिवार में हुआ था। सही कह गया कि शेर कर घर शेर ही जन्?म लेता है। इनका परिवार सिंख पंथ के होने बाद भी आर्यसमाजी था और स्?वामी दयानंद की शिक्षा इनके परिवाद में कूट-कूट कर भरी हुई थी। एक आर्य समाजी परिवेश में बड़े होने के कारण भगत सिंह पर भी इसका प्रभाव पड़ा और वे भी जातिभेद से उपर उठ गए। 9वीं तक की पढ़ाई के बाद उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। और यह वही काला दिन था जब देश में जलियावाला हत्?या कांड हुआ था। इस घटना सम्?पूर्ण देश के साथ साथ इस 12 वर्षीय बालक के हृदय में अंग्रेजों के दिलों में नफरत कूट-कूट कर भर दी। जहॉ प्रारम्?भ में भगत सिंह क्रांतिकारी प्रभाव को ठीक नहीं मानते थे वही इस घटना ने उन्?हें देश की आजादी के सेनानियों में अग्रिम पक्ति में लाकर खड़ा कर रही है। यही नही लाला लाजपत राय पर पड़ी एक एक लाठी, उस समय के युवा मन पर पड़े हजार घावों से ज?यादा दर्द दे रहे थे। भगत सिंह, चन्?द्रशेखर आजाद, बटुकेश ?वर दत्?त और राजगुरु ने पुलिस सुपरिंटेंडेंट सैंडर्स की हत्?या का ष?यूह रचना की और भगत सिंह और राजगुरु के गो ?लियों के वार से वह सैंडर्स गॉड को प?यारा हो गया। निश्चित रूप से भगत सिंह और उनके साथियों में जोश और जवानी चरम सीमा पर थी। राष?ट्रीय विधान सभा में बम फेकने के बाद चाहते तो भाग सकते थे किन्?तु भारत माता की जय बोलते हुऐ फाँसी की बेदी पर चढ़ना मंजूर किया और 23 मार्च 1931 हसते हुऐ निम?न गीत गाते हुये निकले और भारत माता की जय बोलते हुऐ फाँसी पर चढ़ गये।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नीतीश कुमार का जेडीयू का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना तय, 24 को हो सकती है घोषणा

निशांत कुमार बहुत जल्द सरकार और संगठन दोनों में अहम जिम्मेदारी संभालेंगे

पटना।

जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने कहा है कि नीतीश कुमार का पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना तय है और 24 मार्च को इसकी घोषणा की जाएगी। पार्टी सूत्रों के मुताबिक रविवार तक नामांकन भरने की आखिरी तारीख है। 24 मार्च को नाम वापस लेने की डेडलाइन है। अगर कोई और नामांकन नहीं आया तो 24 मार्च को ही निर्विरोध चुनाव की घोषणा होगी। जानकारी के मुताबिक स्क्रूटनी 23 मार्च को होगी। अगर जरूरत पड़ी तो 27 मार्च को वोटिंग कराई जाएगी।

बता दें यह नीतीश कुमार का चौथा या पांचवां टर्म होगा। राज्यसभा सांसद चुने जाने के बाद वे राष्ट्रीय स्तर पर ज्यादा सक्रिय रहेंगे। संजय झा ने कहा कि नीतीश कुमार पार्टी और सरकार दोनों को गाइड करेंगे। यहां यह भी बता दें कि बिहार में समृद्धि यात्रा जारी है, लेकिन अब फोकस राष्ट्रीय राजनीति पर शिफ्ट हो रहा है। वहीं। बीते आठ मार्च को जदयू में विधिवत रूप से शामिल हुए सीएम नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार को लेकर संजय झा ने और भी बड़ा बयान दिया है। झा ने कहा कि निशांत कुमार बहुत जल्द सरकार और संगठन दोनों में अहम जिम्मेदारी संभालेंगे। युवा नेताओं और कार्यकर्ताओं में उनकी अच्छी पॉपुलैरिटी है। नई बिहार सरकार में वे कैबिनेट का हिस्सा बन सकते हैं।

जेडीयू नेता अब खुलकर कह रहे हैं कि निशांत पिता के विकास कार्यों को आगे बढ़ाएंगे और पार्टी में उनका रोल जल्द तय होगा। नीतीश कुमार के राज्यसभा जाने के बाद बिहार में नया मुख्यमंत्री बन सकता है और निशांत को डिप्टी सीएम या मंत्री जैसी बड़ी जिम्मेदारी मिलने की चर्चा तेज है। ऐसे में साफ है कि संजय झा का यह बयान बिहार की राजनीति में नया टर्निंग पॉइंट साबित हो सकता है। नीतीश राष्ट्रीय अध्यक्ष बनकर केंद्र की राजनीति पर फोकस करेंगे, जबकि निशांत राज्य स्तर पर पार्टी को मजबूत करेंगे। जेडीयू कार्यकर्ता इस फैसले से खुश हैं और 24 मार्च का इंतजार अब खत्म होने वाला है।

इस पूरे घटनाक्रम पर राजनीति के जानकारों का मानना है कि अगर नीतीश कुमार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनते हैं, तो वे एक साथ संगठन और सत्ता दोनों पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेंगे।

वहीं, इस पूरे घटनाक्रम के बीच संजय झा के मुताबिक पिछले कुछ समय से निशांत सार्वजनिक रूप से सक्रिय हैं और पार्टी से जुड़े कार्यक्रमों में उनकी मौजूदगी बढ़ी है। ऐसे में जेडीयू के अंदर इसे ÷नेतृत्व की अगली पीढ़ी÷ के रूप में देखा जा रहा है। ऐसे में आने वाले दिनों में यह देखना होगा कि यह बदलाव बिहार की राजनीति और एनडीए के अंदर की राजनीति पर क्या असर डालते हैं।

हिमालय की तेज गति से पिघल रही बर्फ ने बढ़ाई चिंता, गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों पर मंडराया संकट

नई दिल्ली । हिमालय, जिसे पूरी दुनिया एशिया के 'वॉटर टावर' के रूप में जानती है, आज एक गंभीर अस्तित्वगत संकट से जूझ रहा है। हालिया वैज्ञानिक रिपोर्टों और अध्ययनों से यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि हिमालय के ग्लेशियर अब पहले की तुलना में दोगुनी रफ्तार से पिघल रहे हैं। यह स्थिति न केवल पर्यावरण के लिए चेतावनी है, बल्कि गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी जीवनदायिनी नदियों के भविष्य पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। यदि पिघलने की यही गति जारी रही, तो आने वाले दशकों में करोड़ों लोगों के सामने पानी का भीषण संकट खड़ा हो सकता है। आंकड़ों के अनुसार, हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियर बहुत तेजी से सिकुड़ रहे हैं। वर्ष 1990 से 2020 के बीच ग्लेशियर क्षेत्र का लगभग 12 प्रतिशत हिस्सा विलुप्त हो चुका है, जबकि बर्फ के कुल भंडार में 9 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि 21वीं सदी में बर्फ पिघलने की दर 20वीं सदी के मुकाबले दोगुनी हो गई है। विशेष रूप से 2010 के बाद से इस गिरावट में अप्रत्याशित तेजी आई है, जिससे छोटे ग्लेशियर पूरी तरह गायब होने की कगार पर पहुंच गए हैं।इस पिघलते स्वरूप का सबसे भयावह प्रभाव गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन पर देखने को मिल रहा है। पिछले तीन दशकों में इन क्षेत्रों में ग्लेशियरों का क्रमशः 21 प्रतिशत और 16 प्रतिशत हिस्सा कम हुआ है। ये नदियां भारत और पड़ोसी देशों की एक विशाल आबादी की प्यास बुझाती हैं और कृषि व अर्थव्यवस्था का आधार हैं। ग्लेशियरों के सिकुड़ने से सूखे के मौसम में इन नदियों का जलस्तर काफी गिर सकता है, जिससे खेती और बिजली उत्पादन पर सीधा असर पड़ेगा।हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में स्थित लगभग 63,000 ग्लेशियर प्राकृतिक जल भंडार का कार्य करते हैं। बढ़ते वैश्विक तापमान और वर्षा के बदलते चक्र ने इस प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया है। शोध बताते हैं कि 5500 मीटर से कम ऊंचाई पर स्थित ग्लेशियर सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। साथ ही, दक्षिण और पूर्व दिशा की ओर ढलान वाले ग्लेशियर सीधी धूप के संपर्क में आने के कारण तेजी से खत्म हो रहे हैं। यह केवल बर्फ का पिघलना नहीं है, बल्कि एक वैश्विक आपदा की आहट है जिसे समय रहते रोकने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

लिटिल इंडिया शहर पर ईरान ने मारी मिसाइल, यहां रहते हैं भारतीय मूल के यहूदी

नई दिल्ली ।

इजराइल और ईरान के बीच जारी युद्ध ने शनिवार शाम एक भयावह मोड़ ले लिया जब ईरान की एक बैलिस्टिक मिसाइल दक्षिण इजराइल के शहर डिमोना पर दागी। यह शहर न केवल इजराइल के परमाणु रिएक्टर है, बल्कि अपनी विशाल भारतीय आबादी के कारण लिटिल इंडिया के नाम से भी मशहूर है। स्थानीय लोगों के मुताबिक मिसाइल एक कम्युनिटी बिल्डिंग पर गिरी, जिससे आसपास के पुराने मकान भी क्षतिग्रस्त हो गए। ज्यादातर लोग समय रहते शेल्टर में पहुंच गए थे, जिससे बड़ा नुकसान टल गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक डिमोना की करीब 30 फीसदी आबादी भारतीय मूल के यहूदियों की है, जिनमें से ज्यादातर महाराष्ट्र के हैं।

यहां क्रिकेट भी काफी लोकप्रिय है और भारतीय मिठाइयां व स्नैक्स स्थानीय बाजारों में आसानी से मिल जाते हैं। यहां की गलियों में मराठी और भारतीय स्वाद रचे-बसे हैं। हमले के बाद पूरे समुदाय में डर का माहौल है। इजराइली रक्षा बल ने स्वीकार किया है कि उनका एयर डिफेंस सिस्टम इस मिसाइल को इंटरसेप्ट करने में नाकाम रहा। ईरान ने इस हमले को अपने नतांज परमाणु केंद्र पर हुए हमले का बदला बताया है। हालांकि अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने साफ किया है कि डिमोना स्थित परमाणु अनुसंधान केंद्र सुरक्षित है और वहां किसी नुकसान के संकेत नहीं मिले हैं।

वजन बढ़ा तो नहीं उड़ा पाएंगे विमान, सख्त नियम लागू करने जा रहा एयर इंडिया

नई दिल्ली (ईएमएस)। एयर इंडिया अपने पायलटों और केबिन क्रू के लिए एक सख्त फिटनेस नीति लागू करने जा रही है। 1 मई से प्रभावी होने वाले इस नए नियम के तहत सभी स्थायी और अनुबंध पर कार्यरत चालक दल के सदस्यों का उड़ान से पहले और बाद में फिटनेस टेस्ट किया जाएगा। इस नीति का मुख्य आधार बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) को बनाया गया है। यदि किसी सदस्य का वजन निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं पाया जाता है, तो उसे विमान उड़ाने या केबिन सेवा में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। एयरलाइन का स्पष्ट कहना है कि विमानन सेवाओं की संवेदनशीलता को देखते हुए क्रू मेंबर्स का शारीरिक रूप से फिट होना सुरक्षा और परिचालन की दृष्टि से अनिवार्य है।

नए दिशा-निर्देशों के अनुसार, बीएमआई की आदर्श सीमा 18 से 24.9 के बीच रखी गई है। यदि किसी सदस्य का बीएमआई 24.9 से अधिक पाया जाता है, तो उसे ओवरवेट की श्रेणी में रखा जाएगा और तत्काल प्रभाव से रोस्टर से हटा दिया जाएगा। ऐसे सदस्यों के वेतन में भी कटौती की जाएगी और वे वजन नियंत्रित करने के बाद ही ड्यूटी पर लौट सकेंगे। वहीं, 18 से कम बीएमआई वाले अंडरवेट सदस्यों को सात दिनों के मेडिकल इवैलुएशन के लिए भेजा जाएगा, जिसका खर्च उन्हें स्वयं वहन करना होगा। यदि वे फंक्शनल असेसमेंट क्लियर नहीं कर पाते हैं, तो उनके भुगतान में तब तक कटौती जारी रहेगी जब तक वे फिटनेस मानक हासिल नहीं कर लेते। एयर इंडिया के प्रवक्ता के अनुसार, यह नीति न केवल सुरक्षा मानकों को बढ़ाएगी बल्कि कर्मचारियों को लंबे समय तक स्वस्थ रहकर कार्य करने में भी मदद करेगी।

फिटनेस नियमों के साथ-साथ एयर इंडिया पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच अपनी उड़ानों के परिचालन पर भी विशेष ध्यान दे रही है। ईरान संकट और क्षेत्रीय अस्थिरता के बावजूद, एयर इंडिया समूह ने रविवार को पश्चिम एशिया के लिए कुल 50 उड़ानों के परिचालन की योजना बनाई है। इसमें एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ मिलकर सऊदी अरब के जेद्दा और ओमान की राजधानी मस्कट के लिए 20 नियमित उड़ानें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, संयुक्त अरब अमीरात, रियाद, दम्मम और मस्कट से दिल्ली, मुंबई, कोच्चि और बेंगलुरु जैसे प्रमुख भारतीय शहरों के लिए 30 विशेष उड़ानें संचालित की जा रही हैं। एयरलाइन का उद्देश्य तनावपूर्ण स्थितियों के बीच भी यात्रियों को सुरक्षित और सुचारू हवाई सेवा उपलब्ध कराना है।

तमिलनाडु चुनाव- एनडीए में सीटों का फॉर्मूला लगभग तय, डीएमके गठबंधन में बढ़ी खींचतान

चेन्नई । तमिलनाडु विधानसभा चुनाव को लेकर राज्य की सियासी सरगर्मी अपने चरम पर पहुंच गई है। राज्य के दो प्रमुख गठबंधनों के भीतर सीटों के बंटवारे और शक्ति संतुलन को लेकर जारी खींचतान ने चुनावी मुकाबले को दिलचस्प बना दिया है। एक ओर एआईएडीएमके के नेतृत्व वाला एनडीए गठबंधन सीटों के तालमेल को अंतिम रूप देने के बेहद करीब है, वहीं दूसरी ओर डीएमके के नेतृत्व वाले सेक्युलर प्रोग्रेसिव अलायंस (एसपीए) में सहयोगी दलों के बीच असहमति के स्वर मुखर होने लगे हैं। एनडीए खेमे से मिल रही जानकारी के अनुसार, गठबंधन में सीट बंटवारे का फॉर्मूला लगभग तैयार है। प्रस्तावित योजना के मुताबिक, एआईएडीएमके करीब 170 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है, जबकि भाजपा के हिस्से में 25 से 29 सीटें आने की संभावना है। गठबंधन के अन्य सहयोगियों में पीएमके को 18 और एएमएमके को 10 सीटें दी जा सकती हैं, जबकि छोटे दलों को एक से तीन सीटें मिलने की उम्मीद है। एएमएमके प्रमुख टीटीवी दिनाकरण ने दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद संकेत दिए कि गठबंधन का पूरा ध्यान एक ठोस चुनावी रणनीति पर है। उन्होंने इस गठबंधन की तुलना महाभारत के पांडवों से करते हुए विपक्षी खेमे पर तीखा हमला बोला। उम्मीद जताई जा रही है कि अगले दो-तीन दिनों में चेन्नई में होने वाली बैठक के बाद इस पर औपचारिक मुहर लग जाएगी। दूसरी तरफ, डीएमके गठबंधन में सीटों का गणित उलझता नजर आ रहा है। गठबंधन के छोटे सहयोगी दल टीवीके ने सीट आवंटन से असंतोष जताते हुए गठबंधन छोड़ने का ऐलान कर दिया है। बताया जा रहा है कि टीवीके दो सीटों की मांग कर रही थी, लेकिन डीएमके ने केवल एक सीट का प्रस्ताव दिया। इसके अलावा, वामपंथी दल सीपीएम भी सीटों की संख्या को लेकर अपनी मांग पर अड़ी हुई है। पार्टी के भीतर इस बात पर मंथन चल रहा है कि क्या डीएमके के प्रस्ताव को स्वीकार किया जाए या फिर गठबंधन से बाहर निकलकर स्वतंत्र राह चुनी जाए।

जहरीले दूध से हड़कंपः आंध्र प्रदेश में 16 मौतें, कई की हालत गंभीर

पूर्वी गोदावरी ।

आंध्र प्रदेश में एक दर्दनाक घटना ने खाद्य सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता खड़ी कर दी है। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले में मिलावटी दूध पीने से अब तक 16 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि तीन मरीजों की हालत अभी भी नाजुक बनी हुई है। लालाचेरुवु, चौदेस्वरनगर और स्वरूपनगर जैसे इलाकों में फरवरी के मध्य से ही लोगों के बीमार पड़ने की घटनाएं सामने आने लगी थीं। पीड़ितों में उल्टी, तेज पेट दर्द, पेशाब रुकना और किडनी फेलियर जैसे खतरनाक लक्षण देखे गए। जांच में खुलासा हुआ कि नरसापुरम गांव की एक स्थानीय डेयरी यूनिट से सप्लाई किए गए दूध में एथिलीन ग्लाइकॉल नामक जहरीला रसायन मिला हुआ था। यह पदार्थ आमतौर पर एंटी-फ्रीज में इस्तेमाल किया जाता है और मानव शरीर के लिए बेहद घातक माना जाता है। इस जहरीले दूध के सेवन से 100 से अधिक परिवार प्रभावित हुए, जिनमें बच्चे और बुजुर्ग भी शामिल हैं। कई मरीजों को गंभीर स्थिति में अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उन्हें डायलिसिस और वेंटिलेटर सपोर्ट तक की जरूरत पड़ी।

स्वास्थ्य विभाग की जांच में यह भी सामने आया कि पीड़ितों के शरीर में ब्लड यूरिया और सीरम क्रिएटिनिन का स्तर असामान्य रूप से बढ़ा हुआ था, जो किडनी को गंभीर नुकसान पहुंचने का संकेत है। घटना के बाद प्रशासन ने तुरंत दूध की सप्लाई पर रोक लगा दी और प्रभावित इलाकों में घर-घर जाकर सर्वे शुरू किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने संदिग्ध दूध विक्रेता को गिरफ्तार कर लिया है।

धामी कैबिनेट विस्तार के बाद विभाग बंटवारे पर टिकी नजरें, सियासी समीकरण होंगे तय

देहरादून।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंत्रिमंडल का विस्तार कर लंबे समय से चल रही अटकलों पर विराम लगा दिया है, लेकिन इसके साथ ही राज्य की राजनीति में नई हलचल तेज हो गई है। अब सबसे अहम चरण मंत्रियों के बीच विभागों के बंटवारे का है, जिस पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं। सत्ता के गलियारों में यह चर्चा जोरों पर है कि मुख्यमंत्री किस मंत्री को कौन सा विभाग सौंपते हैं, क्योंकि यही फैसला सरकार के भीतर उनके प्रभाव और राजनीतिक कद को तय करेगा। विभागों का बंटवारा यह स्पष्ट करेगा कि कौन मंत्री प्रभावशाली भूमिका में रहेगा और किसे सीमित दायरे में काम करना होगा। सरकार और संगठन में मंत्रियों की अहमियत का आकलन उनके पास मौजूद विभागों के आधार पर किया जाता है। पर्यटन, ऊर्जा, लोक निर्माण, शहरी विकास, समाज कल्याण, ग्राम्य विकास, आवास, गृह, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन, परिवहन और शिक्षा जैसे विभागों को हमेशा से हाईप्रोफाइल माना जाता रहा है। इन विभागों की जिम्मेदारी संभालने वाले मंत्रियों को स्वाभाविक रूप से मजबूत और प्रभावशाली माना जाता है।

फिलहाल इन प्रमुख विभागों का जिम्मा पुराने मंत्रियों के पास ही है। वर्ष 2023 में कैबिनेट मंत्री चंदनराम दास के निधन और मार्च 2025 में प्रेमचंद अग्रवाल के इस्तीफे के बाद उनके कई विभाग मुख्यमंत्री के पास ही हैं। हाल ही में मंत्रिमंडल में शामिल मदन कौशिक और खजान दास पहले भी कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं, जबकि भरत सिंह चौधरी, प्रदीप बत्रा और राम सिंह कैड़ा को पहली बार यह जिम्मेदारी मिली है। ऐसे में सभी नए और पुराने मंत्रियों की नजर अहम विभागों पर है। मुख्यमंत्री के सामने सबसे बड़ी चुनौती नए और अनुभवी चेहरों के बीच संतुलन बनाने की है, ताकि

प्रशासनिक कार्यकुशलता के साथ-साथ स्पष्ट राजनीतिक संदेश भी दिया जा सके। खासकर 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए यह फैसला और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

इसी बीच धामी सरकार के चार साल पूरे होने के अवसर पर 23 से 25 मार्च तक राज्यभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों में विभागीय शिविरों के साथ सांस्कृतिक आयोजन भी शामिल होंगे। मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन ने सभी जिलाधिकारियों को इसके लिए आवश्यक निर्देश जारी कर दिए हैं। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रिमंडल विस्तार के साथ ही पुराने मंत्रियों के विभागों में फेरबदल की संभावना भी जताई जा रही है। पिछले चार वर्षों से काम कर रहे मंत्रियों के प्रदर्शन की समीक्षा के बाद कुछ के विभाग बदले जा सकते हैं, जबकि कुछ को नए दायित्व भी दिए जा सकते हैं। इस पूरे घटनाक्रम ने उत्तराखंड की राजनीति में उत्सुकता और सरगर्मी दोनों बढ़ा दी है।

आधार अपडेट नहीं होने से हजारों छात्राएं मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना से वंचित

-डीपीओ की अपील- मेधा सॉफ्ट पोर्टल पर अपना आधार नंबर अपडेट कराएं छात्राएं

मुजफ्फरपुर।

जिले की करीब 2000 छात्राएं मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना के तहत मिलने वाली 25 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि से वंचित रह गई। इसका मुख्य कारण आवेदन में आधार नंबर अपडेट नहीं होना बताया जा रहा है, जिससे भुगतान प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी। जानकारी के मुताबिक जिले की 1956 छात्राओं के खाते में अब तक राशि नहीं पहुंची है। यही स्थिति राज्य के अन्य जिलों में भी है, जहां करीब 32 हजार छात्राएं इस योजना के लाभ से वंचित रह गई हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सर्व शिक्षा अभियान के डीपीओ सुजीत कुमार दास ने सभी प्रभावित छात्राओं से अपील की है कि वे जल्द से जल्द मेधा सॉफ्ट पोर्टल पर अपना आधार नंबर अपडेट कराएं, ताकि भुगतान की प्रक्रिया पूरी हो सके। मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना के तहत इंटरमीडिएट पास अविवाहित छात्राओं को 25-25 हजार रुपए की एकमुश्त प्रोत्साहन राशि दी जाती है। 2025 में बड़ी संख्या में छात्राओं ने इसके लिए आवेदन किया था, जिनमें से ज्यादातर को राशि उनके बैंक खातों में भेज दी गई है। हालांकि जिन छात्राओं के आवेदन में आधार विवरण नहीं है, उनका भुगतान रोक दिया गया है। शिक्षा विभाग ने कहा है कि आधार नंबर के बिना डीबीटी के जरिए भुगतान संभव नहीं है। इस योजना का उद्देश्य बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, बाल विवाह को रोकना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। विभाग ने सलाह दी है कि सभी पात्र छात्राएं मेधा सॉफ्ट पोर्टल पर लॉगिन कर अपनी व्यक्तिगत और बैंक से जुड़ी जानकारी, विशेषकर आधार नंबर, जल्द अपडेट कराएं। फॉर्म को अंतिम रूप देना भी जरूरी है, ताकि आवेदन स्वीकार हो सके और उन्हें योजना का लाभ मिल सके।

यूडीएफ ने सांप्रदायिक ताकतों के साथ गठजोड़ किया जनता उन्हें स्वीकार्य नहीं करेगी

केरल सीएम विजयन ने चुनाव से पहले अपनी सरकार के दस साल के कार्यकाल गिनाए

तिरुवनंतपुरम ।

केरल में 9 अप्रैल को होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले सीएम पिनाराई विजयन ने अपनी सरकार के दस साल के कार्यकाल का बचाव करते हुए बुनियादी ढांचे के विस्तार, सामाजिक क्षेत्र के पुनर्जीवन और दीर्घकालिक योजना को वामपंथी मोर्चे की लगातार तीसरी जीत की आधारशिला बताया। 2016 से अपनी सरकार के सफर पर विचार करते हुए विजयन ने कहा कि वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) ने ऐसे समय में सत्ता संभाली थी जब ÷सामान्य असंतोष÷ का माहौल था, लेकिन सरकार ने तेजी से बुनियादी ढांचे को विकास का इंजन बनाते हुए प्राथमिकता दी। उन्होंने कांग्रेस-नेतृत्व वाले यूडीएफ पर सांप्रदायिक ताकतों के साथ गठजोड़ का आरोप लगाया और वामपंथ छोड़ने वालों पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों को जनता स्वीकार्य नहीं करेगी। सीएम विजयन ने कहा कि कई मामलों में यूडीएफ सांप्रदायिक ताकतों के साथ खड़ा है। उन्होंने स्थानीय निकाय चुनावों में कुछ स्थानों पर बीजेपी के साथ हाथ मिलाया। स्थानीय निकाय प्रमुखों के चयन में भी उनका समझौता था। यूडीएफ कुछ वोट और सीटों के लिए सांप्रदायिक समूहों के साथ जुड़ रहे हैं। हम, एलडीएफ, ऐसे कदमों के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जो लोग पार्टी माकपा छोड़कर गए, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। वे हमारे और जनता के लिए गद्दार हैं। उन्हें जनता की स्वीकार्यता नहीं मिलेगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सबरीमाला मुद्दे पर सीएम ने कहा कि सबरीमाला मुद्दे का स्थानीय निकाय चुनावों पर ज्यादा प्रभाव नहीं दिखा, यहां तक कि पांडलम में भी नहीं। पांडलम में परिणाम सकारात्मक रहे और लोगों की कुछ अपेक्षाएं थीं, जिन्हें सरकार ने पूरा करने की कोशिश की। हर स्थानीय निकाय की अपनी शासन संबंधी चुनौतियां होती हैं और अलग-अलग क्षेत्रों में मतदान को प्रभावित करने वाले मुद्दे भी अलग होते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्गों में हुए बदलाव का जिक्र करते हुए कहा कि हाल ही में पीएम मोदी द्वारा उद्घाटन किए गए कुछ हिस्से राज्य के विकास की दिशा को स्पष्ट रूप से दिखाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य जैसे प्रमुख क्षेत्रों, जो पहले अव्यवस्थित थे, उनमें अब व्यवस्थित रूप से सुधार हुआ है। शिक्षा क्षेत्र में भी उन्होंने बड़े बदलाव का दावा किया। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूल, जो कभी बंद होने की कगार पर थे और जहां करीब पांच लाख छात्र पढ़ाई छोड़ चुके थे, उन्हें 5,000 करोड़ रुपए के निवेश 50,000 स्मार्ट क्लासरूम, उन्नत प्रयोगशालाओं और बेहतर शिक्षक प्रशिक्षण के जरिए पुनर्जीवित किया गया। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों को नीति आयोग से मिली मान्यता इसका प्रमाण है। बुनियादी ढांचा वित्तपोषण पर विजयन ने केरल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड के पुनरुद्धार को अहम बताया। 2016 में

50,000 करोड़ रुपए की शुरुआती योजना से निवेश 2021 तक बढ़कर 62,000 करोड़ हो गया और अब यह 1.10 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो चुका है। प्रमुख परियोजनाओं में हिल हाईवे और कोस्टल हाईवे शामिल हैं, जिनकी कुल लागत 10,000 करोड़ है।

संक्षिप्त समाचार

60 साल में पहली बार अल-अक्सा मस्जिद ईद में बंद

तेहरान, एजेंसी। दुनियाभर में ईद का जश्न शुरू हो चुका है। मिडिल ईस्ट में अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच पिछले 22 दिनों से जंग चल रही है। ऐसे में 60 साल में पहली बार इजराइल के यरुशलम में अल-अक्सा मस्जिद को ईद की नमाज के लिए बंद कर दिया गया है। 1967 के अरब-इजराइल युद्ध के बाद पहली बार है, जब अल-अक्सा को पूरी तरह बंद किया गया है। यह मुसलमानों के लिए मक्का और मदीना के बाद तीसरा सबसे पवित्र स्थल है। ईरान में ईद बाजार वीरान नजर आए। वहीं कतर,श्व और कुवैत जैसे देशों में खुले मैदानों में नमाज पढ़ने पर रोक लगा दी गई है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने ईद-उल-फितर के अवसर पर जंग में अस्थायी विराम की घोषणा की। जंग को 5 दिनों के लिए रोक दिया गया है। यह कदम सऊदी अरब, तुर्किए और कतर की अपीलों के बाद उठाया गया है। सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार नेप कहा कि यह सीजफायर 18/19 मार्च की रात से 23/24 मार्च की रात तक लागू रहेगा। हालांकि, किसी भी सीमा पार हमले, ड्रोन हमले या पाकिस्तान में आतंकवादी घटना होने पर ऑपरेशन तुरंत फिर से शुरू कर दिया जाएगा।

पोलैंड ने सुरक्षा चिंताओं के बीच इराक से अपने सैनिकों को वापस बुलाया

वारसॉ , एजेंसी। मध्य पूर्व में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति के बीच पोलैंड ने इराक से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया है। रक्षा मंत्री व्लादिस्लाव कोसिनियाक कामिश ने इसकी घोषणा की। यह निर्णय परिचालन स्थितियों और संभावित जोखिमों के आकलन के बाद लिया गया। कोसिनियाक कामिश ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। शिन्हुआ के अनुसार, पोलिश प्रेस एजेंसी के हवाले से इराक में अधिकतम 350 पोलिश सैनिक तैनात थे। इस दल को जॉर्डन, कतर और कुवैत में भी संचालन की अनुमति थी। कोसिनियाक कामिश ने आगे बताया कि अधिकांश कर्मी पहले ही पोलैंड लौट चुके हैं या वापस आने के रास्ते में हैं जबकि कुछ को अपना मिशन जारी रखने के लिए जॉर्डन स्थानांतरित किया गया है। इस बीच, इराक में नाटो मिशन ने भी सुरक्षा चिंताओं के कारण अपने कर्मियों की अस्थायी वापसी शुरू कर दी है। एक वरिष्ठ सुरक्षा स्रोत ने शुक्रवार को इराकी न्यूज़ एजेंसी (आईएनए) को यह जानकारी दी। सूत्र ने इस कदम को जारी संघर्ष और मिशन सदस्यों की सुरक्षा को लेकर चिंताओं के कारण उठाया गया अस्थायी उपाय बताया। आईएनए के अनुसार युद्ध समाप्त होने और इराक में सुरक्षा स्थिति स्थिर होने पर वे वापस लौट आएंगे। गैर-लड़ाकू सलाहकार नाटो मिशन इराक 2018 में इराकी सरकार के अनुरोध पर स्थापित किया गया था, ताकि उसके सुरक्षा क्षेत्र को मजबूत किया जा सके। यह अस्थायी वापसी 28 फरवरी को तेहरान और ईरान के कई अन्य शहरों पर इज़राइल और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किए गए संयुक्त हमलों के बाद बढ़े तनाव के बीच हुई, जिसमें ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता सहित वरिष्ठ सैन्य कमांडरों और नागरिकों की मौत हो गई। इसके जवाब में ईरान ने मध्य पूर्व में इज़राइल और अमेरिकी ठिकानों तथा संपत्तियों को निशाना बनाते हुए मिसाइल और ड्रोन हमलों की कई लहरें शुरू कीं।

जेलेंस्की ने अमेरिका भेजा प्रतिनिधिमंडल, फिर तेज हुई त्रिपक्षीय वार्ता की कोशिशें

कीव, एजेंसी। यूक्रेनी राष्ट्र्पति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने एक प्रतिनिधिमंडल अमेरिका भेजा है, ताकि उनके देश पर रूस के आक्रमण को समाप्त करने के लिए थमी हुई वार्ता को आगे बढ़ाया जा सके। वहीं, क्रेमलिन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को संकेत दिया कि मॉस्को और कीव के बीच अमेरिका की मध्यस्थता वाली वार्ता का नया दौर जल्द शुरू हो सकता है। उन्होंने कहा, त्रिपक्षीय वार्ता में अभी तक अहम मुद्दों पर कोई बड़ी प्रगति नहीं हुई है। यह वार्ता रुकी हुई है, क्योंकि ईरान युद्ध दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। जेलेंस्की जल्द वार्ता शुरू करना चाहते हैं और उन्होंने गुरुवार शाम कहा कि उन्होंने प्रतिनिधियों को अमेरिका भेजा है, जिनकी शनिवार को बैठक होने की उम्मीद है। हालांकि, व्हाइट हाउस ने किसी बैठक की पुष्टि नहीं की है। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा कि रूस उन वार्ताओं में शामिल नहीं होगा। उन्होंने कहा कि नए त्रिपक्षीय बैठक का समय और स्थान अभी तय नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, यह विराम अस्थायी है, हम उम्मीद करते हैं कि त्रिपक्षीय प्रारूप की वार्ता फिर शुरू होगी। पश्चिमी यूरोपीय अधिकारियों ने पिछले साल कई बार रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर वार्ता में देरी करने का आरोप लगाया। पुतिन अपनी सेना का उपयोग करके अधिक यूक्रेनी भूमि पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। रूस की सेना यूक्रेन के लगभग 20 फीसदी हिस्से पर कब्जा कर चुकी है। 28 फरवरी को इस्राइल और अमेरिका ने ईरान पर हमले शुरू किए।

ईरान पर हमले के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका को सौंपी सैन्य ठिकानों की चाबी! फिर भी खुश नहीं हुए ट्रंप

लंदन, एजेंसी। एक बड़े नीतिगत बदलाव के तहत, ब्रिटेन ने अमेरिका को होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों को निशाना बनाने वाले ईरानी मिसाइल ठिकानों पर हमले के लिए अपने सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी है। शुक्रवार को ब्रिटिश प्रधानमंत्री कार्यालय ने इस फैसले की पुष्टि की। यह कदम ब्रिटिश मंत्रियों के बीच बढ़ते युद्ध और दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण शिपिंग मार्गों में से एक को बाधित करने के ईरान के प्रयासों को लेकर हुई आपातकालीन वार्ता के बाद उठाया गया है।

ब्रिटिश सरकार का तर्कः 'सामूहिक रक्षा : वाशिंगटन की सैन्य प्रतिक्रिया का स्पष्ट समर्थन करते हुए, ब्रिटिश सरकार ने कहा कि यह कदम 'सामूहिक रक्षा' के अंतर्गत आता है। आधिकारिक बयान में कहा गयाः क्षेत्र की सामूहिक आत्मरक्षा के लिए अमेरिका द्वारा ब्रिटेन के ठिकानों का इस्तेमाल करने के समझौते में अमेरिकी रक्षात्मक अभियान शामिल हैं। इसका उद्देश्य होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों पर हमला करने के लिए इस्तेमाल की जा रही मिसाइल साइटों और उनकी क्षमताओं को नष्ट करना है।

प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने क्यों बदला अपना रुख : यह मंजूरी ऐसे समय में आई है जब कुछ ही दिन पहले ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने ऐसे ही एक अनुरोध को यह कहते हुए टाल दिया था कि किसी भी कार्रवाई के लिए कानूनी औचित्य की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया था कि ब्रिटेन, ईरान के साथ किसी व्यापक युद्ध में सीधे तौर पर नहीं घसीटा जाएगा। हालांकि, मध्य पूर्व में ब्रिटिश सहयोगियों पर ईरान द्वारा किए गए हमलों के बाद स्टार्मर ने अपना रुख बदल लिया। अब अमेरिका ब्रिटेन के दो प्रमुख सैन्य ठिकानों का उपयोग कर सकेगाः आरएएफ फेयरफोर्ड, और हिंद महासागर में स्थित संयुक्त अमेरिका-ब्रिटेन बेस डिएगो गार्सिया।

डोनाल्ड ट्रंप की प्रतिक्रियाः 'बहुत देर से उठाया गया कदम' : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप युद्ध शुरू होने के बाद से ही स्टार्मर की आलोचना करते रहे हैं। उनका मानना था कि ब्रिटेन पर्याप्त मदद नहीं कर रहा है। इस फैसले के बाद भी ट्रंप ने अपनी आलोचना जारी रखते हुए इसे बहुत देर से दी गई प्रतिक्रिया बताया। वाइट हाउस के बाहर ट्रंप ने कहा कि ईमानदारी से कहूं तो मैं ब्रिटेन से थोड़ा हैरान था- उन्हें बहुत पहले ही कार्रवाई करनी चाहिए थी।

सोमवार को भी ट्रंप ने निराशा जताते हुए ब्रिटेन को कभी सहयोगियों का रोल्स-रॉयस कहा था। डिएगो गार्सिया का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि रिश्ते मजबूत होने के बावजूद यह देरी असामान्य थी, और टिप्पणी की कि उन्होंने उस द्वीप का इस्तेमाल नहीं करने दिया जिस पर पता नहीं क्यों उन्होंने अपने अधिकार छोड़ दिए।

ईरान की तीखी प्रतिक्रिया और चेतावनी : दूसरी ओर, ईरान ने इस कदम की कड़ी आलोचना की है और इसके गंभीर परिणामों की चेतावनी दी है। ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने स्टार्मर पर अमेरिकी सेना को ब्रिटिश ठिकानों का इस्तेमाल करने की अनुमति देकर ब्रिटिश नागरिकों की जान खतरे में डालने का आरोप लगाया।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अरागची ने लिखाः ब्रिटेन के अधिकांश लोग ईरान पर थोपे गए इजरायल-अमेरिका युद्ध का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं। अपने ही लोगों की अनदेखी करते हुए, मिस्टर स्टार्मर ईरान के खिलाफ आक्रामकता के लिए ब्रिटेन के ठिकानों के इस्तेमाल की अनुमति देकर ब्रिटिश नागरिकों की जान खतरे में डाल रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि तेहरान इस कदम के खिलाफ आत्मरक्षा के अपने अधिकार का प्रयोग करेगा।

क्यूबा ने बिजली संकट के बीच अमेरिकी दूतावास के डीजल आयात पर लगाई रोक

हवाना , एजेंसी। अमेरिका के साथ बढ़ती तनातनी के बीच क्यूबा ने सख्त संदेश देते हुए राजधानी हवाना स्थित अमेरिकी दूतावास का डीजल आयात का अनुरोध पूरी तरह ठुकरा दिया है। क्यूबा की सरकार के इस फैसले को केवल अमेरिकी दूतावास में ईंधन के मसले के तौर पर नहीं, बल्कि राजनीतिक चुनौती और ट्रंप को खुला दो टूक संदेश के तौर पर भी देखा जा रहा है। ऊर्जा को लेकर ट्रंप प्रशासन की धमकियों और ब्लैकमेल के बावजूद क्यूबा के इस सख्त संदेश ने एक नई चर्चा को जन्म दे दिया है।

इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि क्यूबा ने अमेरिकी दूतावास की डीजल आयात करने की अनुमति देने की अनुरोध को पूरी तरह से खारिज कर दिया है, जिससे ऊर्जा संकट और कूटनीतिक तनाव बढ़ गया है। क्यूबा सरकार ने यह फैसला ट्रंप प्रशासन की तरफ से देश पर लागू ईंधन ब्लॉकएड के बीच लिया है, जिससे क्यूबा को विदेश से तेल और डीजल की आपूर्ति मुश्किल हो गई है।

दूतावास में डीजल आयात करना चाहता था : बताया जा रहा है कि अमेरिकी दूतावास अपने जेनरेटर के लिए डीजल इम्पोर्ट करना चाह रहा था, क्योंकि लंबे समय से बिजली कटौती और ऊर्जा संकट के कारण दूतावास की रोजमर्रा की कामकाज में कठिनाइयां आ रही हैं। अमेरिका की तरफ से क्यूबा में ईंधन ब्लॉकएड लागू करने के बाद देश में डीजल की कमी इतनी गंभीर हो गई है कि अमेरिका के विदेश विभाग ने हवाना में अपने कर्मचारियों की संख्या कम करने पर विचार शुरू कर दिया है। हालांकि अगर ऐसा होता है कि तो संभव है कि क्यूबा भी अपनी वाशिंगटन दूतावास में कर्मचारियों की संख्या घटाने की मांग करे।

इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि क्यूबा को पहले मुख्य रूप से तेल वेनेजुएला से मिलता था। लेकिन अब वहां से तेल नहीं आ रहा है। अमेरिका ने वेनेजुएला के साथ संबंधों को रोक दिया है और किसी भी देश को क्यूबा को तेल देने पर सजा देने की धमकी दी है। क्यूबा अब अपने स्वयं के प्राकृतिक गैस, सोलर ऊर्जा और स्थानीय तेल पर निर्भर है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। इस वजह से देश में कई जगह बिजली कटौती और सर्विस की समस्याएं हो रही हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वे क्यूबा में सरकारी बदलाव चाहते हैं। ट्रंप ने क्यूबा के नेताओं को चेतावनी दी कि वे वेनेजुएला के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की तरह न हो जाएं, जिन्हें अमेरिका ने सत्ता से हटाया था। हालांकि अमेरिका और क्यूबा के बीच बातचीत जारी है।

दक्षिण कोरिया के डेजॉन में ऑटो पार्ट्स प्लांट में आग से 10 की मौत, 59 घायल

डेजॉन , एजेंसी। दक्षिण कोरिया के डेजॉन में एक कार पार्ट्स फैक्ट्री में लगी भीषण आग में 10 लोगों की मौत हो गई जबकि चार अन्य अब भी लापता हैं। अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि 59 लोग गंभीर या मामूली रूप से घायल हुए हैं। दमकलकर्मी उन चार लोगों की तलाश कर रहे हैं, जो आग लगने के समय लापता हो गए थे।

अधिकारियों के अनुसार, एक शव फैक्ट्री की दूसरी मंजिल पर मिला जबकि अन्य नौ शव तीसरी मंजिल पर पाए गए। शुक्रवार दोपहर 1:17 बजे आग लगने की सूचना मिलने के समय प्लांट के अंदर कुल 170 कर्मचारी मौजूद थे। आग की गंभीरता को देखते हुए राष्ट्रीय अग्निशमन एजेंसी ने राष्ट्रीय स्तर की फायरफाइटिंग मोबिलाइजेशन का आदेश जारी किया, जो तब दिया जाता है जब आग का स्तर स्थानीय प्रशासन की क्षमता से अधिक माना जाता है। संरचना के ढहने की आशंका के कारण दमकलकर्मी पहले अंदर प्रवेश नहीं कर पा रहे थे। साथ ही, इमारत के अंदर मौजूद 200 किलोग्राम सोडियम ने भी आग बुझाने के प्रयास को जटिल बना दिया, क्योंकि गलत तरीके से संभालने पर यह विस्फोट कर सकता था। अधिकारियों ने बताया कि विशेषज्ञों द्वारा इमारत में प्रवेश को सुरक्षित घोषित करने के बाद शुक्रवार रात 10:50 बजे से खोज अभियान शुरू किया गया। एक अधिकारी ने कहा कि दमकलकर्मी लापता लोगों को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे। अधिकारी ने कहा, 'हम उन संरचनाओं को तोड़ने की योजना बना रहे हैं, जिनकी जांच पहले ही रेस्क्यू डॉग्स कर चुके हैं, ताकि बचावकर्मियों को तैनात किया जा सके और लापता लोगों की तलाश जारी रखी जा सके। दक्षिण कोरिया के प्रधानमंत्री किम मिन-सोक ने गृह मंत्रालय और अग्निशमन एजेंसी को आपात निर्देश दिए कि लोगों को बचाने और आग बुझाने के लिए सभी उपलब्ध उपकरणों और कर्मियों का उपयोग किया जाए। दक्षिण कोरिया के प्रधानमंत्री ने डेजॉन महानगर प्रशासन और पुलिस को यातायात नियंत्रण और निकासी उपाय लागू कर आगे किसी भी नुकसान को रोकने का आदेश भी दिया।

ट्रम्प बोले- ईरान को तबाह कर रहे, सीजफायर नहीं करेंगे, मुझे लगता है हम जीत चुके, उनकी नेवी, एयरफोर्स, एयर डिफेंस सब खत्म

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुक्रवार को मीडिया से बात करते हुए कहा कि अमेरिका ईरान के साथ सीजफायर नहीं करेगा। उन्होने कहा, 'बातचीत हो सकती है, लेकिन लड़ाई रोकने का इरादा नहीं है।' ट्रम्प ने कहा, 'जब आप दूसरे पक्ष को पूरी तरह तबाह कर रहे होते हैं, तब सीजफायर नहीं किया जाता।' ट्रम्प ने दावा किया कि अमेरिका ने ईरान की सैन्य ताकत को काफी हद तक खत्म कर दिया है।

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है हम जीत चुके हैं। हमने उनकी नेवी, एयरफोर्स, एयर डिफेंस सब खत्म कर दिए हैं।' हालांकि उन्होंने यह भी माना कि ईरान अब भी होर्मुज स्ट्रेट में रुकावट डाल रहा है। होर्मुज को लेकर ट्रम्प ने कहा कि इसे खोलना मुश्किल नहीं है, लेकिन इसके लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग जरूरी होगा। उन्होंने नाटो देशों की आलोचना करते हुए कहा कि वे अब तक मदद के लिए आगे नहीं आए हैं।

ट्रम्प ने नाटो देशों को कायर बताया : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान युद्ध में साथ न देने पर नाटो सहयोगी देशों पर नाराजगी जताई है। ट्रम्प ने कहा है कि नाटो देश कायर हैं और अमेरिका के बिना यह गठबंधन सिर्फ कागजी शेर है। ट्रम्प ने होर्मुज स्ट्रेट का जिक्र करते हुए कहा कि इसे खुला रखने के लिए सैन्य मदद देना आसान है, लेकिन सहयोगी देश इसमें भी पीछे हट रहे हैं। उन्होंने कहा, 'यह बहुत आसान सैन्य कदम है, जिसमें बहुत कम जोखिम है, लेकिन वे मदद नहीं करना चाहते। कायर हैं, और हम इसे याद रखेंगे।'

संयुक्त राष्ट्र महासचिव बोले- बोर्ड ऑफ पीस ट्रम्प का निजी प्रोजेक्ट बन गया : संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है कि यूएन, ट्रम्प के बोर्ड ऑफ पीस के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा है, लेकिन केवल अमेरिकी राष्ट्रपति के नेतृत्व में चल रही पहल को प्रभावी तरीका नहीं मानता।

पोलिटिको को दिए इंटरव्यू में गुटेरेस ने कहा कि मौजूदा समय में यह एक तरह से ट्रम्प का निजी प्रोजेक्ट बन गया है, जिसमें पूरा नियंत्रण उनके पास है। उन्होंने कहा, 'यह हमारे सामने मौजूद गंभीर समस्याओं को हल करने का प्रभावी तरीका नहीं है। हमें अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के मूल्यों को स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना होगा, जो किसी भी शांति पहल के लिए जरूरी हैं।' हालांकि, गुटेरेस ने यह भी बताया कि संयुक्त राष्ट्र बोर्ड ऑफ पीस द्वारा बनाई गई संरचनाओं के साथ काम कर रहा है। खासकर गाजा के पुनर्निर्माण पर। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने ईरान पर अमेरिका और इजराइल के हमलों के बाद ट्रम्प से बात की है, तो उन्होंने साफ कहा, नहीं।

बांग्लादेश के विदेश मंत्री अगले महीने भारत आएंगे

ढाका, एजेंसी। अंतरिम सरकार के दौरान बिगड़े भारत और बांग्लादेश के द्विपक्षीय रिश्ते वापस पटरी पर लौटने के आसार हैं। बांग्लादेश की नवनिर्वाचित तारिक रहमान सरकार के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान अगले महीने के पहले हफ्ते भारत आएंगे। शुक्रवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर की भारत स्थित बांग्लादेश के उच्चायुक्त रियाज हमीदुल्लाह की मुलाकात के बाद ये जानकारी सामने आई है।

गौरतलब है कि बीते साल के अंतिम दिन पूर्व पीएम खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में हिस्सा लेने बांग्लादेश गए जयशंकर ने अपने बांग्लादेशी समकक्ष को भारत आने का न्योता दिया था। जयशंकर ने सोशल मीडिया पर कहा कि यह मुलाकात आपसी संबंधों को आगे बढ़ाने पर केंद्रित थी। सूत्रों के मुताबिक विदेश मंत्री रहमान 8 अप्रैल को हिंद महासागर सम्मेलन में शिरकत करने के क्रम में दिल्ली होते हुए मॉरीशस जाएंगे। इससे पूर्व भारत ने बांग्लादेश में नई सरकार के गठन का स्वागत किया था और प्रधानमंत्री मोदी ने तब बीएनपी के मुखिया और वर्तमान पीएम तारिक रहमान को फोन कर बधाई दी थी। बाद में उनके शपथ ग्रहण में शामिल होने बांग्लादेश गए लोकसभा स्पीकर ने पीएम रहमान को मोदी का पत्र सौंपा था, जिसमें उन्हें भारत आने का न्यौता दिया गया था।

ऊर्जा संकट के बीच बढ़ी नजदीकी : यूं तो नई सरकार के गठन के बाद से ही दोनों ओर से द्विपक्षीय संबंधों को पटरी पर लाने की पहल हुई, मगर इसमें पश्चिम एशिया में ईरान युद्ध के कारण उत्पन्न वैश्विक ऊर्जा संकट ने भी अहम भूमिका निभाई। इस दौरान बांग्लादेश ने भारत से 50 हजार टन डीजल उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। भारत इस अनुरोध के मद्देनजर पहली खेप के तहत 5,000 टन डीजल भेजने के साथ उपलब्धता के आधार पर और मदद करने के संकेत दे चुका है।

अंतरिम सरकार में रहते भी की थी संबंध बेहतर करने की पहल : अंतरिम सरकार में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रहते विदेश मंत्री रहमान ने दोनों देशों के बिगड़ते रिश्ते को ठीक करने की पहल की थी। तब दिल्ली दौरे पर आए रहमान ने एनएसए अजित डोभाल से बात की थी। गौरतलब है कि रहमान इकलौते शख्स हैं, जिन्हें अंतरिम सरकार के साथ नई सरकार में भी शामिल होने का अवसर मिला।

धीरे-धीरे आगे बढ़ने की रणनीति... दोनों देशों के बीच सबसे बड़ा मुद्दा अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यार्पण का है। हालांकि संकेत हैं कि इस मुख्य मुद्दे से पहले दोनों देश अन्य मामलों में नरमी लाने की रणनीति पर आगे बढ़ रहे हैं। इस क्रम में इस दौरे को भी देखा जा रहा है।

रूस के बाद अब ईरान से तेल खरीद पर हटा प्रतिबंध

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने समुद्र में फंसे ईरानी तेल पर लगाए गए प्रतिबंधों को अस्थायी रूप से हटाने का फैसला किया है। ट्रंप प्रशासन ने एक महीने के लिए विशेष अनुमति देते हुए इन प्रतिबंधों को 19 अप्रैल तक स्थगित कर दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक यह राहत उन तेल खेपों पर लागू होगी, जो शुक्रवार तक जहाजों में लोड की जा चुकी थीं। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, यह कदम बढ़ती तेल कीमतों को नियंत्रित करने के प्रयास के तहत उठाया गया है। इस बीच ईरान ने चेतावनी दी है कि वह अपने जवाबी हमलों का दायरा बढ़ाकर दुनिया भर के पर्यटन और मनोरंजन स्थलों को भी निशाना बना सकता है। क्या ईरान पर कम होंगे अमेरिका-इस्राइल के हमले? इसी दौरान अमेरिका ने पश्चिम एशिया में और अधिक युद्धपोत और मरीन तैनात करने की घोषणा की। हालांकि कुछ घंटों बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर कहा कि उनका प्रशासन क्षेत्र में सैन्य अभियान को कम करने पर विचार कर रहा है। उनका यह बयान ऐसे समय आया, जब तेल कीमतों में उछाल के कारण अमेरिकी शेयर बाजार में गिरावट दर्ज की गई। युद्ध के बीच विरोधाभासी संकेत सामने आ रहे हैं और संघर्ष थमता नजर नहीं आ रहा है। ईरान ने इस्राइल और खाड़ी क्षेत्र के ऊर्जा ठिकानों पर हमले तेज कर दिए हैं। यह घटनाक्रम उस समय हो रहा है, जब क्षेत्र में धार्मिक महत्व का दिन मनाया जा रहा था और ईरान में लोग पारंपरिक नववर्ष नवरोज का उत्सव मना रहे थे।

दुनियाभर में गहरा रहा ऊर्जा संकट : ईरान से सीमित जानकारी सामने आने की वजह से यह साफ नहीं है कि अमेरिका और इस्राइल के हमलों से उसके परमाणु, सैन्य या ऊर्जा ठिकानों को कितना नुकसान हुआ है। ये हमले 28 फरवरी से जारी हैं। हालांकि, ईरान के हमलों के कारण तेल आपूर्ति प्रभावित हो रही है, जिससे न केवल पश्चिम एशिया बल्कि वैश्विक स्तर पर खाद्य और ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। अमेरिका और इस्राइल ने इस युद्ध के अलग-अलग कारण बताए हैं। इनमें ईरान के नेतृत्व को कमजोर करने के साथ उसके परमाणु और मिसाइल कार्यक्रमों को खत्म करना शामिल है। इन तमाम वजहों के बाद भी ईरान में फिलहाल न तो किसी बड़े जनविद्रोह के संकेत मिले हैं और न ही युद्ध के जल्द खत्म होने की कोई संभावना दिखाई दे रही है।

ईरान ओमान और तुर्की पर हालिया हमलों के पीछे नहीं : मोजतबा खामेनेई

तेहरान , एजेंसी। ईरान के सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई ने तुर्की और ओमान के कुछ हिस्सों पर हमलों से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि तुर्की और ओमान के कुछ हिस्सों पर हाल में हुए हमले ईरानी सशस्त्र बलों या उसके सहयोगियों की ओर से नहीं किए गए थे। वेबसाइट पर छपे एक बयान के मुताबिक, मोजतबा खामेनेई ने यह बात शुक्रवार (लोकल टाइम) को ईद-उल-फितर आने पर बधाई देने के लिए एक मैसेज में कही, जो रमजान महीने के खत्म होने और 21 मार्च को ईरानी नए साल की शुरुआत 'नवरोज' का प्रतीक है।

समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के मुताबिक, खामेनेई ने कहा कि ईरान के तुर्की और ओमान दोनों के साथ सही रिश्ते हैं। उन्होंने इजरायल की 'चालबाजी' को लेकर चेतावनी देते हुए कहा कि वह पड़ोसी देशों के बीच फूट डालने के लिए 'फॉल्स फ्लैग' ऑपरेशनों का सहारा ले सकता है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसे ऑपरेशन दूसरे देशों में भी किए जा सकते हैं।

उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के महत्व पर जोर देते हुए अफगानिस्तान और पाकिस्तान से आपसी संबंध बेहतर बनाने की अपील की और इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने की अपनी तत्परता जताई।

ईरानी नेता ने नागरिकों के रहन-सहन के स्तर और देश के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने की जरूरत पर भी बल दिया, जिसमें जनता की भलाई और संपत्ति सृजन पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई। साथ ही उन्होंने नए साल को राष्ट्रीय एकता के प्रकाश में प्रतिरोध अर्थव्यवस्था का साल घोषित किया। इसी बीच, नाटो तुर्की के दक्षिणी अदाना प्रांत में एक अतिरिक्त पैट्रियट एयर डिफेंस सिस्टम तैनात कर चुका है। तुर्की के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, पिछले सप्ताह ईरान की ओर से दागी गई एक बैलिस्टिक मिसाइल को रोकने के बाद यह कदम उठाया

गया। तुर्की के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता रियर एडमिरल जेकी अकतुर्क ने पत्रकारों से बातचीत में कहा, 'हमारे एयरस्पेस और हमारे नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर उठाए गए कदमों के अलावा, जर्मनी के रामस्टीन में एलाइड एयर कमांड की ओर से तैनात एक और पैट्रियट सिस्टम को अदाना में तैनात किया जा रहा है, जो वहां पहले से मौजूद स्पेनिश पैट्रियट सिस्टम को सपोर्ट करेगा।'

अकतुर्क ने कहा कि 13 मार्च को ईरान से लॉन्च की गई एक मिसाइल तुर्की के एयरस्पेस में घुस गई, जिसे नाटो एयर और मिसाइल डिफेंस यूनिट्स ने पूर्वी भूमध्य सागर के ऊपर निष्क्रिय कर दिया।

बता दें कि 28 फरवरी को इजरायल और अमेरिका ने तेहरान और ईरान के कई अन्य शहरों पर संयुक्त हमले किए थे, जिसमें ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता खामेनेई समेत कई वरिष्ठ सैन्य कमांडर और नागरिक मारे गए थे। इसके जवाब में ईरान ने इजरायल और मध्य पूर्व में अमेरिकी ठिकानों व संपत्तियों को निशाना बनाते हुए मिसाइल और ड्रोन हमले किए।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ऐतिहासिक उपलब्धि पर देशभर से बधाइयाँ

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को स्वतंत्र भारत के इतिहास में सरकार के प्रमुख के रूप में सबसे लंबे समय तक सेवा करने का नया कीर्तिमान स्थापित करने पर देशभर से बधाइयाँ मिल रही हैं। इस उपलब्धि के बाद विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों और भाजपा नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं और उनके नेतृत्व की सराहना की। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का 8931 दिनों का सार्वजनिक जीवन केवल एक राजनीतिक यात्रा नहीं, बल्कि निरंतर तप, त्याग और राष्ट्रसेवा का प्रतीक है।दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए प्रधानमंत्री को इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि उनके कुशल मार्गदर्शन में देश विकसित भारत के संकल्प की ओर लगातार आगे बढ़ रहा है। रेखा गुप्ता ने यह भी लिखा कि गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में विकास की नई दिशा देने से लेकर प्रधानमंत्री के रूप में भारत को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाने तक उनकी यात्रा राष्ट्र प्रथम और अंत्योदय के सिद्धांतों को साकार करती है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने भी प्रधानमंत्री को बधाई देते हुए उन्हें विश्व के सबसे लोकप्रिय जननेताओं में से एक बताया। उन्होंने कहा कि मोदी का नेतृत्व देश को 'अंत्योदय से सर्वोदय' की दिशा में आगे बढ़ा रहा है और उनके मार्गदर्शन में भारत विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि प्रधानमंत्री का नेतृत्व देश के लिए प्रेरणादायक है और उनकी सेवा भावना राष्ट्र के लिए एक मिसाल है।

महावीर जयंती पर गांधीनगर आएंगे पीएम मोदी, जैन संग्रहालय का कर सकते हैं उद्घाटन

आचार्य पद्म सागर सूरीश्वर महाराज के जीवन और आध्यात्मिक यात्रा पर आधारित होगा विशेष संग्रहालय

अहमदाबाद (ईएमएस)7महावीर जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गांधीनगर दौरे की संभावना जताई जा रही है। बताया जाता है कि पीएम मोदी 31 मार्च को जैन समुदाय को समर्पित एक विशेष संग्रहालय का उद्घाटन कर सकते हैं। यह संग्रहालय जैन आचार्य पद्म सागर सूरीश्वर महाराज के जीवन, उनके आध्यात्मिक प्रवास और धार्मिक योगदान को समर्पित होगा। इसमें उनके पदविहार (आध्यात्मिक यात्राओं) से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेज, संस्मरण और दुर्लभ सामग्री प्रदर्शित की जाएगी, जो उनके उपदेशों और जीवन दर्शन की गहरी झलक प्रदान करेगी। बताया जाता है कि आचार्य पद्म सागर सूरीश्वर महाराज ने अपने जीवनकाल में लगभग 2.5 लाख किलोमीटर की पदयात्रा की थी, जो जैन परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

संग्रहालय में हस्तलिखित पांडुलिपियां, शिलालेख, मूर्तियां, पीतल की कलाकृतियां और धार्मिक विषयों पर आधारित चित्रों का समृद्ध संग्रह होगा। यह प्रदर्शनी जैन परंपराओं, तपस्या की विधियों और समुदाय की आध्यात्मिक विरासत को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी। प्रधानमंत्री के संभावित दौरे को ध्यान में रखते हुए गांधीनगर में तैयारियां भी शुरू कर दी गई हैं।

महाजंग की आग और भड़की... ईरान ने हिंद महासागर में अमेरिका-ब्रिटेन के बेस पर दागीं मिसाइलें

दुबई में जोरदार धमाके, अमेरिका-इजराईल का ईरान के नतांज न्यूक्लियर प्लांट पर हमला,परमाणु युद्ध की दस्तक!

तेल अवीव/तेहरान/ वॉशिंगटन ।

मिडिल ईस्ट में जारी युद्ध का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। ईरान ने शनिवार को हिंद महासागर में स्थित अमेरिका और ब्रिटेन के रणनीतिक सैन्य बेस डिएगो गार्सिया पर दो मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें दागी हैं। इस हमले के तुरंत बाद दुबई में भी एयर डिफेंस सिस्टम एक्टिव होने और जोरदार धमाकों की आवाज सुनाई दी। वहीं अमेरिका और इजराइल ने ईरान के नतांज न्यूक्लियर सेंटर पर हवाई हमला किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस हमले में अभी तक किसी भी तरह का रेडियोएक्टिव (खतरनाक परमाणु) रिसाव नहीं हुआ है। इस इलाके के आसपास रहने वाले लोगों को कोई खतरा नहीं है। इजराइल और अमेरिका ने इससे पहले 2 मार्च को भी इस प्लांट पर हमला किया था। यह ईरान का सबसे बड़ा न्यूक्लियर सेंटर है, यहां यूरेनियम इनरिचमेंट किया जाता है। इसकी एक खास बात यह है कि इसका बड़ा हिस्सा जमीन के नीचे बना हुआ है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि किसी हमले से इसे बचाया जा सके। उधर, ईरान भी आर-पार के मूड में आ गया है। इससे खाड़ी में परमाणु युद्ध की संभावना बढ़ गई है।

इजराइली आर्मी ने ईरान के नतांज न्यूक्लियर प्लांट पर हमले से इनकार किया है। आईडीएफ ने कहा कि हमने यह हमला नहीं किया है और हमें नहीं पता यह किसने किया। हम अमेरिकी कार्रवाई पर कोई टिप्पणी नहीं करते। वहीं, ईरान की न्यूज एजेंसी तसनीम के मुताबिक, जिस जगह पर हमला हुआ उसका नाम अहमदी रोशन है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस हमले के बाद किसी भी तरह का खतरनाक रिसाव नहीं हुआ है और आसपास रहने वाले लोगों को कोई खतरा नहीं है।

पश्चिम बंगाल चुनावः सुरक्षा के कड़े इंतजाम, वेबकास्टिंग बाधित होने पर होगा पुनर्मतदान

कोलकाता ।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं और चुनाव आयोग ने निष्पक्ष व शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित करने के लिए सख्त कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। पूरे राज्य में केंद्रीय बलों की व्यापक तैनाती की जा रही है और चुनाव ड्यूटी में लगे अधिकारियों के साथ तालमेल मजबूत करने के लिए मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय में लगातार बैठकों का दौर जारी है। रविवार को भी बलों की तैनाती को लेकर एक आपात बैठक बुलाई गई, जिसमें सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने पर चर्चा हुई।

चुनाव आयोग ने स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी मतदान केंद्र पर यदि वेबकास्टिंग 30 मिनट से अधिक समय तक बाधित रहती है तो वहां दोबारा मतदान कराया जाएगा। इस सख्त निर्देश का उद्देश्य मतदान प्रक्रिया की पारदर्शिता बनाए रखना और किसी भी तरह की गड़बड़ी को रोकना है। चुनावों की औपचारिक घोषणा से पहले ही केंद्रीय बलों की 480 कंपनियां राज्य में पहुंच चुकी हैं और फिलहाल गश्ती अभियान जारी है।सूत्रों के अनुसार, चरणबद्ध तरीके से करीब 2,000 और कंपनियां राज्य में तैनात की जाएंगी, जिससे कुल केंद्रीय बलों की संख्या लगभग ढाई लाख तक पहुंच सकती है। चुनाव कार्यक्रम घोषित होते ही आयोग ने राज्य पुलिस और प्रशासनिक ढांचे में बड़े स्तर पर फेरबदल भी शुरू कर दिया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने राज्य पुलिस महानिदेशक, कोलकाता पुलिस आयुक्त और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर एकीकृत कमान और नियंत्रण प्रणाली बनाने पर जोर दिया है। यह प्रणाली मुख्य निर्वाचन अधिकारी को जिला मजिस्ट्रेटों और अन्य एजेंसियों से सीधे जोड़ेगी और चौबीसों घंटे निगरानी सुनिश्चित करेगी।इस बार चुनाव में तकनीक का भी व्यापक उपयोग किया जा रहा है। राज्य के सभी 80,719 मतदान केंद्रों पर 100 प्रतिशत वेबकास्टिंग की व्यवस्था होगी और लगभग दो लाख सीसीटीवी कैमरों व वेबकैम के जरिए निगरानी की जाएगी। जरूरत पड़ने पर ड्रोन भी तैनात किए जाएंगे। इसके अलावा फ्लाइंग स्क्वाड और क्विक रिस्पॉन्स टीमों के वाहनों में 360 डिग्री कैमरों से लाइव स्ट्रीमिंग होगी, जबकि केंद्रीय बलों के जवानों को बॉडी-वॉर्न कैमरे दिए जाएंगे।

आयोग ने जिला चुनाव अधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि मतदाताओं को डराने-धमकाने या मतदान से रोकने की शिकायत मिलती है, तो संबंधित अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी, जिसमें पद से हटाना या निलंबन भी शामिल है।

इन सभी कदमों से साफ है कि इस बार पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी और सुरक्षित बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

बिहार दिवस पर राष्ट्रपति ने दी शुभकामनाएं, पीएम ने कहा- प्रगति के नए अध्याय गढ़ रहा प्रदेश

नई दिल्ली ।

बिहार दिवस के अवसर पर देश के शीर्ष नेताओं ने राज्य के लोगों को शुभकामनाएं देते हुए इसके गौरवशाली इतिहास और उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। इस मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सहित कई प्रमुख नेताओं ने अपने संदेशों में बिहार की ऐतिहासिक विरासत और विकास की संभावनाओं को रेखांकित किया।राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अपने संदेश में कहा कि बिहार केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व इतिहास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने इसे विश्व के प्रथम गणराज्य की भूमि बताते हुए कहा कि इस प्रदेश ने प्राचीन काल से ही महान सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक परंपराओं को जन्म दिया है। उन्होंने विश्वास जताया कि बिहार के लोग अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर राज्य और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बिहार दिवस पर राज्य के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि यह प्रदेश भारतीय विरासत को भव्यता और दिव्यता प्रदान करने वाला रहा है। उन्होंने कहा कि आज बिहार विकास के नए अध्याय लिखने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने यह भी भरोसा जताया कि राज्य के ऊर्जावान और कर्मठ लोग विकसित बिहार के साथ विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में अहम योगदान देंगे।वहीं, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने संदेश में बिहार के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्तमान में राज्य अपने संकल्प और प्रयासों से एक बेहतर भविष्य की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि वे समृद्ध बिहार के निर्माण के लिए मिलकर काम करें और राज्य को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं।इसके अलावा, बिहार विधानसभा अध्यक्ष प्रेम कुमार ने भी बिहार स्थापना दिवस पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह अवसर राज्य के इतिहास, संस्कृति और विकास के संकल्प को और मजबूत करने का है। उन्होंने सभी नागरिकों से आत्मनिर्भर और सशक्त बिहार के निर्माण में योगदान देने की अपील की। बिहार दिवस के इस अवसर पर पूरे राज्य में उत्साह का माहौल देखा गया और लोगों ने अपने-अपने तरीके से इस दिन को मनाया।

उत्तराखंड में मतदाता सत्यापन में गड़बड़ी, प्री-एसआईआर रिपोर्ट से बढ़ी निर्वाचन विभाग की चिंता

देहरादून (ईएमएस)। देहरादून में अप्रैल में प्रस्तावित फाइनल स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) से पहले आई प्री-एसआईआर रिपोर्ट ने निर्वाचन विभाग की चिंताएं बढ़ा दी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, राज्य के मैदानी जिलों खासकर देहरादून, ऊधमसिंह नगर और नैनीताल में बड़ी संख्या में मतदाता अपने पते पर नहीं मिल रहे हैं। सबसे ज्यादा गंभीर स्थिति राजधानी की धर्मपुर विधानसभा सीट पर सामने आई है, जहां करीब 50 प्रतिशत मतदाता बीएलओ को अपने पते पर नहीं मिले। इसी तरह रायपुर में लगभग 40 प्रतिशत और डोईवाला में 35 प्रतिशत मतदाताओं का सत्यापन नहीं हो सका है। इस स्थिति ने विभाग के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है, क्योंकि इन इलाकों में वर्ष 2003 के बाद बाहरी राज्यों से आकर बसने वाली आबादी में तेजी से वृद्धि हुई है। ऐसे में मतदाताओं का भौतिक सत्यापन और उनके पते का सही मिलान करना कठिन साबित हो रहा है। हालांकि निर्वाचन विभाग इस समस्या से निपटने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। तेजी से विकसित हो रही नई कॉलोनियों और आवासीय सोसाइटी में भी मतदाता डेटा को पोर्टल पर अपडेट करने की प्रक्रिया धीमी रही है। इसके अलावा बाहरी राज्यों से आने वाले मतदाताओं के स्थायी और अस्थायी पते के सत्यापन में भी बीएलओ को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई मामलों में एक ही व्यक्ति की

जानकारी अलग-अलग राज्यों में दर्ज होने से भी भ्रम की स्थिति बन रही है।रिपोर्ट में सामने आया है कि धर्मपुर, रायपुर और डोईवाला जैसी सीटों पर कम सत्यापन प्रतिशत के पीछे सामाजिक और भौगोलिक कारण भी जिम्मेदार हैं। इन क्षेत्रों में प्रवासी आबादी का दबाव अधिक है, जिससे घर-घर जाकर सत्यापन करना और डेटा को सटीक रूप से मैप करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। इसके विपरीत, राज्य के पहाड़ी जिलों ने इस प्रक्रिया में बेहतर प्रदर्शन किया है। रुद्रप्रयाग और बागेश्वर ने 100 प्रतिशत सत्यापन के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया है, जबकि चंपावत और उत्तरकाशी 99 प्रतिशत, अल्मोड़ा 97 प्रतिशत और पिथौरागढ़, टिहरी व चमोली 95 प्रतिशत के आसपास रहे हैं। वहीं पौड़ी 93 प्रतिशत, हरिद्वार 89 प्रतिशत, नैनीताल 88 प्रतिशत, ऊधम सिंह नगर 77 प्रतिशत और देहरादून 71 प्रतिशत पर है।

दुनिया जंग में उलझी.....इधर भारत समंदर में खलबली मचाने को तैयार

3 अप्रैल को नौसेना में शामिल होगा देशी सुपरमैन 'तारागिरी'

नई दिल्ली ।

ईरान जंग के बीच भारत की समुद्री ताकत और बढ़ने वाली है। अब दुश्मन को भारत का देशी दम दिखाई देगा। दरअसल समंदर में खलबली मचाने को भारत का देशी सुपरमैन यानी शक्ति मान तैयार है। जी हां, स्वदेशी गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट 'तारागिरी' समंदर में अपनी ताकत दिखाने आ रहा है। इसके नौसेना में शामिल होने की तारीख तय हो गई है। खुद रक्षामंत्री राजनाथ सिंह तारागिरी को नौसेना में शामिल करने वाले है। खास बात है कि 'तारागिरी' ब्रह्मोस मिसाइल से लैस है। जी हां, प्रोजेक्ट 17ए के तहत नीलगिरी क्लास का एडवांस गाइडेड स्टेल्थ फ्रिगेट तारागिरी नौसेना में शामिल होने को तैयार है। नौसेना द्वारा जारी बयान के अनुसार, अगले महीने यानी 3 अप्रैल को विशाखापत्तनम में तारागिरी को औपचारिक रूप से नौसेना में शामिल किया जाएगा। इस मौके पर रक्षामंत्री सिंह स्वयं इस गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट को नौसेना को समर्पित करने वाले है। वर्ष 2026 की शुरुआत में एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट 'अंजदीप' को भी नौसेना में शामिल किया गया था। बात दें कि प्रोजेक्ट 17ए के तहत बनाए जा रहे सात नीलगिरी क्लास के युद्धपोतों में से पहला एडवांस स्टेल्थ फ्रिगेट आईएनएस नीलगिरी को जनवरी 2025 में नौसेना में शामिल किया था। इसके बाद इसी वर्ष हिमगिरी और उदयगिरी को भी शामिल किया। अब तारागिरी की बारी है। गाइडेड मिसाइल स्टेल्थ फ्रिगेट 'तारागिरी' ब्रह्मोस मिसाइल से लैस है, जो एंटी-सर्फेस और एंटी-शिप युद्ध में अत्यंत सक्षम है। एंटी-एयर वॉरफेयर के लिए इसमें लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'बराक-8', एयर डिफेंस गन और एंटी-सबमरीन वॉरफेयर के लिए स्वदेशी टॉरपीडो 'वरुणास्त्र' और रॉकेट लांचर लगाए गए हैं। तारागिरी लंबी दूरी से आने वाले हमलों का पता लगाने, ट्रैक करने और उन्हें निष्क्रिय करने के लिए आधुनिक सोनार, कॉम्बैट मैनेजमेंट सिस्टम और मल्टी-फंक्शन डिजिटल रडार से लैस है। इस फ्रिगेट में हेलिकॉप्टर हैंगर भी है, जिसमें दो हेलिकॉप्टर आसानी से लैंड कर सकते हैं। प्रोजेक्ट 17ए के तहत बनाए जा रहे सभी सात फ्रिगेट में करीब 75 प्रतिशत उपकरण स्वदेशी कंपनियों से लिए गए हैं। इसका डिजाइन और स्टील भी स्वदेशी है। इसका डिजाइन नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो ने तैयार किया है। 6700 टन वजनी यह फ्रिगेट 30 नॉटिकल मील प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकता है। प्रोजेक्ट 17ए के तहत सात नीलगिरी क्लास गाइडेड मिसाइल स्टेल्थ फ्रिगेट भारतीय नौसेना के लिए बनाए जा रहे हैं। इसमें चार फ्रिगेट मजगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) और तीन गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) द्वारा बनाए गए हैं। साल 2019 से 2022 के बीच इन सभी को लांच किया जा चुका है। तारागिरी नीलगिरी क्लास का चौथा फ्रिगेट है, जो अब नौसेना में शामिल होने जा रहा है, जबकि बाकी तीन के समुद्री परीक्षण जारी हैं। इन सभी

स्टेल्थ गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट के शामिल होने के बाद समुद्र में भारत की ताकत में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।